विश्व का सर्वाधिक प्रसारित बाल मासिक
देवपुत्र
फाल्गुन-चैत्र २०७३ मार्च २०१७
ISSN-2321-3981
होली आई...
₹ १५

Think IAS...

दृष्टि The Vision

Think Drishti

Most trusted & renowned institute among IAS aspirants

पिछले डेढ़ दशक से लगातार हिन्दी माध्यम का सर्वश्रेष्ठ परिणाम

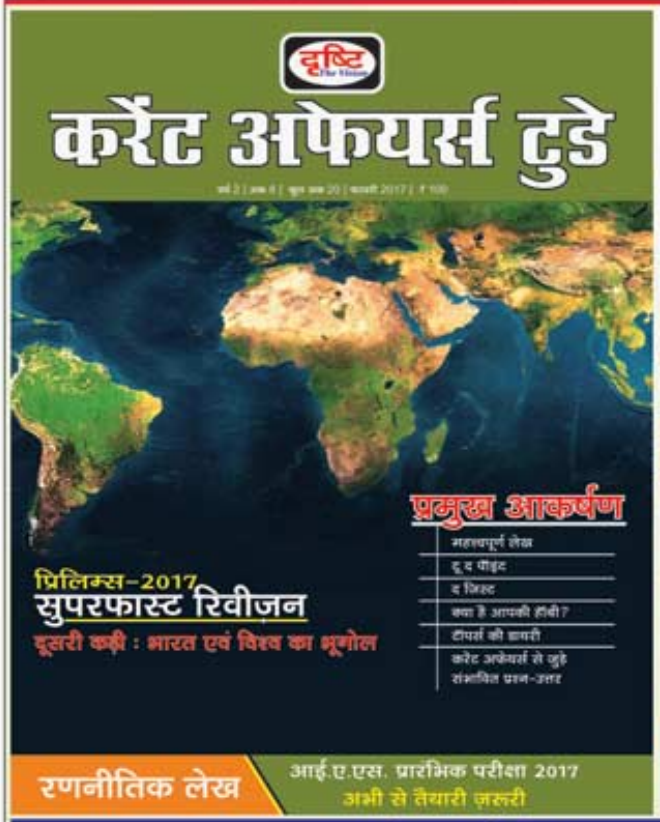

आपके नज़दीकी पुस्तक विक्रेता के पास उपलब्ध

सब जानते हैं कि सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी सिर्फ किताबों और नोट्स से नहीं हो सकती। यह भी ज़रूरी है कि आप दिन-प्रतिदिन की घटनाओं से जुड़ने के लिए इंटरनेट पर उपलब्ध अच्छे लेखों को पढ़ते रहें और अच्छी डिबेट्स को सुनते रहें।

आपकी इन सभी समस्याओं को सुलझाने के लिए हम आपको आमंत्रित करते हैं अपनी लोकप्रिय वेबसाइट पर

www.drishtiias.com

वितरण एवं विज्ञापन के लिए संपर्क करें- (+91) 8130392355

641, Ist Floor, Dr. Mukherji Nagar, Delhi-110009 | Contact : 87501 87501, 011-47532596

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

फाल्गुन-चैत्र २०७३ ▪ वर्ष ३७
मार्च २०१७ ▪ अंक ९

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	१५ रुपये
वार्षिक	:	१५० रुपये
त्रैवार्षिक	:	४०० रुपये
पंचवार्षिक	:	६०० रुपये
आजीवन	:	११०० रुपये

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल देवपुत्र लिखें।

संपर्क

४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००३३९,
२४००४३९

सीधे देवपुत्र के खाते में राशि जमा करने हेतु –
खाता संख्या –53003591451
IFSC-SBIN0030359
आलोक : कृपया केवल 5000 रु. से अधिक की राशि जमा करने हेतु ही कोर बैंकिंग सुविधा का उपयोग करें।

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो!

गत सप्ताह एक सत्संग कार्यक्रम में रहने का अवसर मिला। कार्यक्रम में मुख्य प्रवचनकार थे जूना पीठाधीश्वर स्वामी अवधेशानन्द जी और प्रवचन का विषय था 'चलें दिव्य जीवन की ओर'। अपार ज्ञान सम्पदा के धनी और विषय के श्रेष्ठ प्रतिपादक के रूप में अखिल विश्व में ख्याति प्राप्त पू. स्वामी जी ने यहां भी इस कठिन विषय को अत्यंत सरल और सुगम्य भाषा में प्रस्तुत किया।

स्वामी जी ने कहा- 'आदमी बड़ा, विचार से बनता है, पदार्थ से नहीं... जिस दिन आप श्रेष्ठ विचारों से जुड़ेंगे आपको बड़े बनने से कोई नहीं रोक सकेगा... संसार में सरल रहना सबसे कठिन काम हैं... हमारी परेशानी यह है कि हम बड़े दिखना चाहते हैं - बनना नहीं...अपने को जानना यह हमारे लिए सबसे बड़ी चुनौती है... वैचारिक सम्पन्नता के लिए यह आवश्यक है कि हम स्वयं से मुकाबला करें। स्वयं को जानने का प्रयत्न करें... इससे हमारी प्रवृत्ति बदल जाएगी। ...दूसरे को बदलना सम्भव नहीं, इसलिए परिवर्तन स्वयं में लाएं।'

स्वामी जी ऐसे ही सरल शब्दों में और इतने ही छोटे वाक्यों में 'दिव्य जीवन' की प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त कर रहे थे और मुझे लग रहा था कि वे हम सबकी और हम सबके लिए ही तो बात कर रहे हैं। किन्तु इतना सरल होने के बाद भी हम यह सब कर क्यों नहीं पाते? जब इसका विचार करते हैं तो ध्यान आता हैं कि हम अपने में ही खोए हुए हैं। अपने अधूरेपन को समझने के बजाय हमको लगता है कि हम ही सुन्दर हैं, सम्पन्न हैं, श्रेष्ठ हैं, विद्वान हैं। स्वामी जी का कहना था कि इस अधूरेपन से मुक्ति पाकर ही 'दिव्यता' की ओर कदम बढ़ेंगें।

बच्चो! आपको भी लगता है न कि स्वामी जी की बातें बहुत कठिन तो नहीं हैं। परन्तु सरल होने पर भी उसे नित्य की दिनचर्या का विषय बनाए बिना यह सम्भव नहीं। 'दिव्य जीवन' के लिए इस कठिन काम को सरल बनाने की दिशा में आप बढ़ें यह इच्छा है और बढ़ेगें ही यह विश्वास भी।

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com
e-mail -devputraindore@gmail.com

अनुक्रमणिका

कहानी

- प्रकृति का नियम - नरेन्द्र देवांगन ०५
- कोई वृक्ष निराश नहीं - सत्यनारायण भटनागर ०८
- मीठा नीम कड़वा आम - गोविन्द भारद्वाज १४
- बेचार सौदागर - दीपांशु जैन २४
- करनी का फल - शिवचरण सेन 'शिवा' ४४

नाटक

- बासन्ती कनेर - पूनम पाण्डे १८
- कुछ तुम समझे... - राजीव नामदेव 'रानालिधौरी' २५
- सोनपरी की उदारता - अर्चना मण्डलोई २७

प्रसंग

- वीरों की हिंसा - शिवकुमार गोयल २०

संस्मरण

- मीठी यादें - शैवाल सत्यार्थी ४२

जानकारी

- कैसे निश्चित हुआ... - गोपाल माहेश्वरी ३७
- वनवासियों का नववर्ष - प्रो. त्रिलोकीनाथ सिन्हा ३९

कविता

- होली आई - ममता आसाटी ०७
- मुट्ठी में है लाल गुलाल - प्रभुदयाल श्रीवास्तव १३
- अजब पिटारी है - राजेन्द्र निशेश १५
- पिचकारी - सत्यनारायण 'सत्य' २१
- आया नववर्ष - हरीश दुबे ३२
- आओ मनाएं... - अशोक शास्त्री 'अनंत' ३३
- नवसंवत्सर नया वर्ष - प्रदीपमणि तिवारी 'ध्रुव' ३५

चित्रकथा

- फंस गए - देवांशु वत्स १२
- नववर्ष का निश्चय - देवांशु वत्स ३६

स्तम्भ

- कॅरियर -प्रो (डा.) जमनालाल बायती २२
- गाथा वीर शिवाजी की.. - २८
- पुस्तक परिचय - ४०
- हमारे राज्य पुष्प - डॉ. परशुराम शुक्ल ४१

बाल प्रस्तुति

- रंग गुलाल का पर्व - रुपल घनघोरिया ०६
- बारहमासा - मोहिनी गुप्ता १०
- मेरा प्यारा बिक्कू - अलीशा सक्सेना १६
- होली - सुमित शर्मा २६

प्रकृति का नियम

कहानी : नरेन्द्र देवांगन

आदमियों की एक बस्ती के पास कई तरह के वृक्ष थे। उन वृक्षों की लंबी–लंबी शाखाओं पर हरी–हरी पत्तियां थीं। उन पर छोटे–बड़े मीठे फल लगते थे। उन वृक्षों पर ढेर सारी चिड़ियां के घोंसले थे। उन घोंसलों में चिड़ियों के अंडे थे, छोटे–छोटे बच्चे थे। सुबह जब चिड़िया दाना चुगने जातीं, तो वृक्ष उनके अंडों व बच्चों की रखवाली करते थे।

उन बड़े–बड़े वृक्षों के नजदीक ही नीम का एक छोटा–सा पौधा भी उग आया था। वह अभी छोटा था इसलिए उन पर चिड़ियां नहीं आती थीं। वह नीम का पौधा अपने आसपास के पेड़ों को देखता। उन पर ढेर सारी चिड़ियां रहती थीं। उनके घोंसले थे। वह सोचता, काश मेरी टहनियों पर भी चिड़िया आ कर बैठतीं, घोंसला बनातीं।

वह आस लगाए चिड़ियों की ओर देखता रहता। पर जब कोई भी चिड़िया उसकी टहनियों पर नहीं बैठती तो वह उदास हो जाता था।

गर्मी का मौसम था। दिन बड़े हो गए थे। शाम के समय चिड़ियां अपने घोंसलें में लौट रही थीं। वे चहचहा रही थीं। वे झुंड उड़तीं।

आसपास का चक्कर लगातीं। फिर आ कर अपने–अपने पेड़ों पर बैठ जातीं।

एक बार फिर जब वे अपने–अपने पेड़ों पर बैठीं, तो नीम के पौधे ने उनसे पूछा– ''चिड़िया बहनो! तुम मेरी टहनियों पर क्यों नहीं बैठतीं? मेरी टहनियों पर घोंसला बनाओ न।''

एक चिड़िया ने कहा– ''तुम अभी छोटे हो। तुम्हारी टहनियां अभी नाजुक हैं। वे हमारा वजन सह न सकेंगी और टूट जाएंगी।''

दूसरी चिड़िया ने समझाया–''तुम्हारे

पत्ते अभी घने नहीं हुए हैं। तुम जब बड़े हो जाओगे, हमारे बच्चे भी बड़े हो जाएंगे। तब वे तुम पर घोंसले बना लेंगे।''

चिड़ियों की बात सुनकर नीम का पेड़ खुश हो गया। वह अपने बड़े होने का इंतजार करने लगा।

इसी तरह दिन और रात बीतते गए। नीम का वह पौधा धीरे-धीरे बड़ा होता गया। बरसात बीत गई। जाड़ा आ गया और पेड़ों की तरह नीम पेड़ के भी पत्ते झड़ गए।

नीम का पेड़ उदास हो गया। उसने आसपास के पेड़ों से पूछा-''क्या हमारे पत्ते अब फिर नहीं आएंगे?'' और क्या अब चिड़ियां भी घोंसले नहीं बनाएंगी?''

बरगद के एक बूढ़े पेड़ ने उसे समझाया-''बेटा, अभी तुम छोटे हो, तुम्हें प्रकृति के नियम की जानकारी नहीं है। तुम पहली बार पतझड़ का सामना कर रहे हो इसलिए तुम घबरा गए हो। ऋतुओं के अनुसार हम पेड़ों में परिवर्तन होते हैं। तुम देख ही रहे हो कि गर्मी के जाने के बाद बरसात आई। फिर जाड़े के मौसम के आगमन के साथ-साथ पतझड़ का मौसम भी आ गया। साल में एक बार जब पतझड़ का मौसम आता है तब हमें अपने पुराने पत्ते त्यागने पड़ते हैं। उसके बाद फिर नए पत्ते आते हैं। यही प्रकृति का नियम है।''

''नए पत्ते आने में कितने दिन लगेंगे'' नीम के पेड़ ने पूछा।

बात को आगे बढ़ाते हुए आम के पेड़ ने कहा-''आएंगे, बहुत जल्दी हमारे नए पत्ते जरुर आएंगे। जब गर्मी की दस्तक होगी और बसंत ऋतु आएगी तब हम पेड़ों पर बहार आएगी। फिर चारों तरफ रंग बिरंगे फूल खिलेंगे और चिड़ियां मधुर गीत गाएंगी, तब हमारे नए पत्ते आ जाएंगे। फिर चिड़िया भी हम पेड़ों पर अपने घोंसले बनाएंगी।''

और सचमुच ऐसा ही हुआ। जाड़े ने विदा ली गर्मी का अहसास होने लगा। हर तरफ फूल खिलने लगे थे और चिड़ियां गाने लगी थीं। सभी पेड़ों की तरह नीम के पेड़ पर भी नए पत्तों की कोंपले फूट आई थीं। फिर जल्द ही नए पत्ते निकल आए।

जैसे-जैसे गर्मी बढ़ती गई, नीम के पेड़ पर खुशबूदार छोटे-छोटे फूल दिखने लगे। कुछ दिनों बाद फूल फल बन गए। अब वह पूरा बड़ा और घना छायादार पेड़ बन गया था।

उधर, चिड़ियों के बच्चे भी बड़े हो गए थे। वे उड़ना सीख गए थे। धीरे-धीरे नीम के फल पक कर पीले होने लगे। उनमें मिठास आने लगी। नीम के फल मीठे हुए, तो और चिड़ियों ने भी वहां घोंसले बना लिए।

नीम का पेड़ खुशी से झूम उठा। अब जब चिड़ियां उसकी शाखाओं पर बैठकर खेलती कूदती और चहचहातीं तो उसे बड़ा सुकून मिलता था।

● खरोरा (छ.ग.)

|| बाल प्रस्तुति ||

रंग गुलाल का पर्व

कविता : रूपल घनघोरिया

चलो मनाए आज हम होली,
सबको दिखाए रंगों की बोली।
गली गली में बच्चे आते,
सबको रंग-गुलाल लगाते।
होली हमें बहुत हरषाती,
सबके लिए खुशी है लाती।
सबका है एक ही नारा,
होली पर्व है सबसे प्यारा।

● आलमपुर (म.प्र.)

होली आई

कविता : श्रीमती ममता असाटी

देखो-देखो होली है आई
चुबू मुबू के चेहरे पर खुशियाँ है आई
मौसम ने ली है अँगड़ाई।
शीत ऋतु की हो रही है बिदाई
ग्रीष्म ऋतु की आहट है आई
सूरज की किरणों ने उष्णता है दिखलाई
देखो देखो होली है आई।
बच्चों ने होली की योजना खूब है बनाई
रंगबिरंगी पिचकारियाँ बाबा से है मंगवाई
रंगों और गुलाल की सूची है रखवाई
जिसकी काका ने अनुमति है नहीं दिलवाई
दादाजी ने प्राकृतिक रंगों की बात है समझाई
जिस पर सभी बच्चों ने सहमति है जतलाई
बच्चों ने खूब मिठाईयां खाकर शहर में खूब धूम है मचाई
देखो देखो होली है आई
होली ने भक्त प्रह्लाद की स्मृति है करवाई
बच्चों और बहों ने कचरे और अवगुणों की होली है जलाई
होली ने कर दी है अनबन की सफाई
जिसने दी है प्रेम की जड़ों को गहराई
बच्चों! अब है परीक्षा की घड़ी आई
तल्लीनता से करो पढ़ाई वरना सहनी पड़ेगी पिटाई
अथक परिश्रम, पुनरावृत्ति देगी सफलता
अपार जन जन की मिलेगी बधाई
होगा प्रतीत ऐसा होली-सी खुशियाँ है फिर लौट आई
देखो देखो होली है आई

● इन्दौर (म.प्र.)

कोई वृक्ष निराश नहीं होता

कहानी : सत्यनारायण भटनागर

बिल्लू बन्दर इन दिनों बहुत दुखी था। उसकी माँ की मृत्यु हो गई थी। वह परेशान रहता किसी भी काम में उसका मन नहीं लगता। वह एकान्त में अकेला बैठकर विचारमग्न रहता। मिन्टू बन्दर उसका मित्र था। वह हर दम बिल्लू के साथ रहता। मिन्टू बन्दर चाहता था कि बिल्लू अपना दर्द सुनाए। किन्तु बिल्लू बन्दर गुमसुम रहता। मिन्टू बन्दर परेशान था किन्तु कर क्या सकता था।

बिल्लू पढ़ने में अच्छा था। अपनी कक्षा में वह प्रथम आता था। मास्टर जम्बो हाथी भी उससे बहुत खुश रहते थे। उसे आगे की बैंच पर बैठाते पर आजकल बिल्लू चुपचाप पीछे की बैंच पर बैठ जाता था। वह किसी से बात नहीं करता। हँसी तो उसकी जैसे गायब हो गई थी।

अर्द्धवार्षिक परीक्षा हुई। मास्टर जम्बो हाथी ने जब जाँच की तो बिल्लू बन्दर सभी विषयों में अनुत्तीर्ण पाया गया। उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्होंने बिल्लू के दोस्त मिन्टू बन्दर को बुलाकर पूछा– ''क्या बात है तुम्हारा दोस्त गुमसुम रहता है। इस बार सभी विषयों में अनुत्तीर्ण है। बात क्या है? बताओ! '' मिन्टू ने कहा– ''बिल्लू बन्दर की माँ उसे बहुत प्यार करती थी।''

जम्बो मास्टर ने कहा– ''माँ तो सभी की बच्चों को बहुत प्यार करती है। माँ की मृत्यु तो दुःखदाई है ही लेकिन अब साहस रखकर आगे बढ़ना चाहिए। निराश होने से काम नहीं

चलता।'' जम्बो मास्टर सोच में पड़ गए। क्या करें?

दूसरे दिन जम्बो मास्टर ने बिल्लू बन्दर को बुलाया। पास में बैठा कर पूछा–''क्या बात है बिल्लू बेटे! तुम परेशान नजर आते हो। कुछ हमसे कहो। हम तुम्हारी मदद करेंगे।

बिल्लू दुखी था बोला –''मेरी माँ की मृत्यु हे गई है वह मुझे बहुत प्यार करती थी। अब घर में पिताजी ही रह गए है। मुझे सदा डर लगता है। घबराहट होती है। ठीक से नींद भी नहीं आती। पढ़ने लिखने में मन भी नहीं लगता। मैं क्या करुँ मेरे समझ में नहीं आता।''

जम्बो हाथी ने कहा– ''बेटे! तुम सच कहते हो, माँ तो बड़ी प्यारी होती है। उसके न रहने का दुःख तो होता ही है। मेरी माँ के मरने पर मुझे भी दुःख हुआ था, पर हमें अपना काम तो करते रहना चाहिए।''

बिल्लू बोला– ''मेरा मन नहीं लगता। मैं क्या करूँ?

मास्टर जम्बो हाथी बिल्लू को अपने साथ जंगल ले गए। जंगल में पतझड़ के कारण वृक्षों के पत्ते झड़ गए थे। जंगल में वृक्षों के पत्ते बिखरे पड़े थे। जम्बो हाथी एक वृक्ष के नीचे रुके और पूछा– ''बिल्लू इन वृक्षों को क्या हो गया है। इनके पत्ते क्यों गिर गए हैं।''

बिल्लू सोच में पड़ गया। कुछ बोल न पाया, तब मास्टर जम्बो हाथी ने कहा– ''यह पतझड़ का मौसम है। वृक्षों के पत्ते इस मौसम में झड़ जाते हैं। लेकिन वृक्ष निराश नहीं होते। आज तक कोई वृक्ष पत्तों के गिर जाने से दुखी नहीं हुआ क्योंकि फिर नए कोमल पत्ते अपने आप आ जाते हैं। वृक्ष फिर हरा भरा हो जाता है।''

बिल्लू बन्दर बोला–''हाँ मास्टर जी! यह तो मैंने देखा है। फिर कितना हरा भरा लगता है वृक्ष।''

जम्बो मास्टर ने कहा– जब वृक्ष निराश नहीं होते तो फिर हरे भरे हो जाते हैं। तुम क्यों निराश होते हो? फिर से काम काज में लगो। अपनी प्यारी माँ की याद में मन लगाकर पढ़ो तो वह प्रसन्न होगी। सब से मिलोजुलो तो मन प्रसन्न रहेगा। फिर नींद भी अच्छी आएगी और घबराहट भी नहीं होगी। बिल्लू बोला– ''हाँ मास्टर जी! आपने यह तो सच कहा है।''

इतने में मिन्टू आ गया । बिल्लू ने कहा– ''मास्टर जी! मैं मिन्टू के साथ खेलने जाऊँ?'' जम्बो ने प्रसन्नता से सिर हिला दिया। बिल्लू और पिन्टू खेलने चल दिए।

मिन्टू बन्दर आश्चर्यचकित था। यह कैसे परिवर्तन हुआ। मिन्टू भाई यह तो वृक्षों का संदेश है। कोई वृक्ष कभी निराश नहीं होता।

।। समाचार ।।

राजकुमार जैन 'राजन' को राष्ट्रीय सम्मान

लखनऊ। बाल दिवस के मौके पर उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ के केसरबाग स्थित राय उमानाथ बली ऑडिटोरियम में साहित्य, कला, संगीत व समाजसेवा के क्षेत्र में सराहनीय योगदान के लिए देशभर की तीन दर्जन से ज्यादा विभूतियों को राजीव गांधी एक्सीलेंस अवार्ड से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर बाल साहित्य उन्नयन, बाल कल्याण एवं बाल साहित्य रचनाकारों को सम्मान प्रदान करने के विश्वस्तरीय कार्यक्रमों को संपादित करने के लिए आकोला (चित्तौड़गढ़) के साहित्यकार संपादक, प्रकाशक, समाजसेवी, राजकुमार जैन 'राजन' को उत्तर प्रदेश की राज्यमंत्री श्रीमती राजकुमारी कुशवाह के हाथों प्रतिष्ठित 'राजीव गांधी एक्सीलेंस अवार्ड २०१६ ' प्रदान कर सम्मानित किया गया। सम्मान स्वरूप स्मृति चिन्ह, प्रशस्ति पत्र, बैज प्रदान किया गया।

बारह मासा

कविता : मोहिनी गुप्ता

प्रथम महीना चैत से गिन
राम जनम का जिसमें दिन।।
द्वितीय माह आया बैशाख
बैसाखी पंचनद की साख।।
ज्येष्ठ मास को जान तीसरा
अब तो जाड़ा सबको बिसरा।।
चौथा मास आया आषाढ़
नदियों में आती है बाढ़।।
पांचवे सावन घेरे बदरी
झूला-झूलो गाओ कजरी।
भादौ मास को जानो छठा
कृष्ण जन्म की सुन्दर छटा।।
मास सातवां लगा कुंआर
दुर्गा पूजा की आई बहार।।
कार्तिक मास आठवाँ आए
दीवाली के दीप जलाए।।
नवां महीना आया अगहन
सीता बनी राम की दुल्हन।।
पूस मास है क्रम में दस
पीओ सब गन्ने का रस।।
ग्यारहवाँ मास माघ को गाओ
समरसता का भाव जगाओ।।
मास बारहवाँ फाल्गुन आया
साथ में होली के रंग लाया।।
बारह मास हुए अब पूरे
छोड़ो न कोई काम अधूरे।।

• दबोह (म.प्र.)

रंगों की पिचकारी

● राजेश गुजर

होली का त्यौहार रंगों और पिचकारियों का है, नीचे ७ रंगों के बर्तन और ३ पिचकारियाँ हैं। तुम्हें इन पिचकारियों को इस तरह से सजाना है कि हर रंग का बर्तन एक अलग विभाजित हो जाए। अपने दिमाग को चटपट दौड़ाओ और इन पिचकारियों को सजाओ।

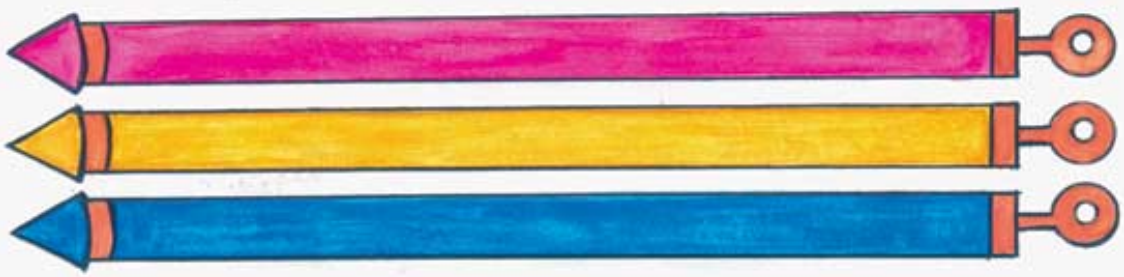

फंस गए

चित्रकथा - देवांशु वत्स

मुट्ठी में है लाल गुलाल

कविता : प्रभुदयाल श्रीवास्तव

नोमू का मुँह पुता लाल से
सोमू का पीली गुलाल से
कुर्ता भीगा राम रतन का,
रम्मी के हैं गीले बाल।
मुट्ठी में है लाल गुलाल।।
चुनियाँ को मुनियाँ ने पकड़ा
नीला रंग गालों पर चुपड़ा
इतना रगड़ा जोर जोर से,
फूल गए हैं दोनों गाल।
मुट्ठी में है लाल गुलाल।।
लल्लू पीला रंग ले आया
कल्लू ने भी हरा उड़ाया
रंग लगाया एक दूजे को,
लड़े भिड़े थे परकी साल।
मुट्ठी में है लाल गुलाल।।
कुछ के हाथों में पिचकारी
गुब्बारों की मारा मारी।
रंग बिरंगे सबके कपड़े,
रंग रंगीले सबके भाल।
मुट्ठी में है लाल गुलाल।।
इंद्र धनुष धरती पर उतरा
रंगा, रंग से कतरा कतरा
नाच रहें हैं सब मस्ती में,
बहुत मजा आया इस साल।
मुट्ठी में है लाल गुलाल।।

● छिन्दवाड़ा (म.प्र.)

मीठा नीम कड़वा आम

कहानी : गोविन्द भारद्वाज

एक घना जंगल था। उसमें अनगिनत पेड़–पौधे थे। जंगल में एक नदी बहती थी। उस नदी के किनारे दो नन्हें–नन्हें पौधे एक साथ उगे। उनमें एक पौधा नीम का था और दूसरा पौधा आम का। दोनों पौधों में आपस में बहुत प्यार था। वे हवा के झोंकों से संग आपस में गले भी मिल लेते थे। समय के साथ–साथ दोनों पौधे बड़े होते जा रहे थे। जैसे–जैसे वे बड़े हो रहे थे, वैसे–वैसे उनका प्रेम भी बढ़ता जा रहा था। उनके प्रेम से अन्य पेड़–पौधे उनसे ईर्ष्या रखते थे। जब वे युवावस्था में पहुँचे तो उनकी जड़ें जमीन के भीतर भी एक जुट हो गई। नीचे जड़ें और ऊपर टहनियां आपस में घुलमिल गई। कई प्रकार के पंछी भी दोनों वृक्षों की हवाओं और फलों का आनन्द लेने लगे।

एक बार की बात है नीम के पेड़ों में पीली–पीली निंबौलियां लदी हुई थी और दूसरी तरफ मोटे–मोटे आम भी। कुछ पंछी पीली–पीली निंबौलियां को खा रहे थे। उनका स्वाद बहुत ही बढ़िया और स्वादिष्ट था। हरियल तोता आम खा रहा था। किन्तु उसका चेहरा इतना खुश नहीं दिख रहा था जितना कि निंबौलियां खाने वाले पंछियों का दिख रहा था। बल्लू गिलहरी ने हरियल से पूछा– ''अरे हरियल भैया! तुम आमों का आनन्द ले रहे हो फिर भी उदास दिखाई दे रहे हो। हम लोग कड़वी कही जाने वाली निंबौलियां खा रहे हैं फिर भी खुश हैं।''

''क्या बतालाऊं बल्लू इस आम के पेड़ के फल मीठे नहीं हैं, इनमें कड़वापन महसूस होता है।'' हरियल तोते ने आम दिखाते हुए कहा। बल्लू बोली–''ऐसा कभी हो सकता है क्या? आम मीठे नहीं तो खट्टे हो सकते हैं कड़वे नहीं।'' ''तुम्हें मेरी बात पर विश्वास नहीं है तो खुद चख कर देख लो।'' हरियल ने उसे एक आम देते हुए कहा।

बल्लू गिलहरी ने तुरंत आम चखा तो उसे भी कड़वापन लगा। वह बोली– ''सचमुच ये आम तो कड़वे हैं, लेकिन तुम हमारे नीम की निंबौली चख कर देखो।'' हरियल ने नीम की निंबौली खाकर देखी तो उसे मजा आ गया। उसने मुस्कराते हुए कहा–''हाँ बल्लू! इसमें तो बहुत मीठापन है। ये तो नन्हें–नन्हें आम जैसी लग रही हैं।'' आम कड़वा है यह बात सारे जंगल में आग की तरह फैल गयी। अब सारे पंछी निंबौलियां खाने में व्यस्त रहते। आम को कोई छूता तक नहीं। आम पक–पक कर खुद गिर जाते किन्तु उन्हें खाता कोई नहीं।

आम और नीम में आपस में तकरार होने लगी। नीम घमण्डी हो गया। उसने सोचा– ''मैं आम से अधिक मीठा हो गया हूँ मुझे आप से दोस्ती रखने में क्या फायदा।''

एक दिन उनका झगड़ा इतना बढ़ गया कि जंगल के सारे पशु–पंछी वहाँ जमा हो गए। उनकी लड़ाई से सारे पेड़ बड़े खुश हुए। वे चाहते थे कि इनमें फूट पड़े और अलग हो

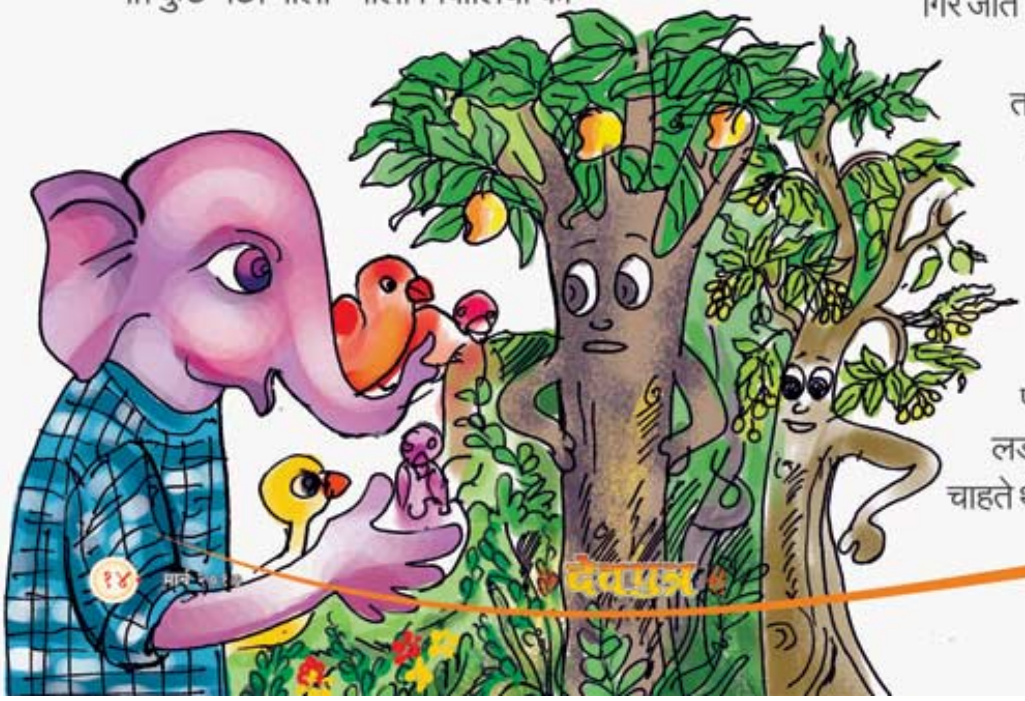

जाए। आखिर में एक बूढ़ा हाथी वहाँ पहुँचा। उसने पूछा–''भाई! तुम दोनों बचपन के साथी हो और आज ऐसे क्यों झगड़ रहे हो? कोई बात है तो बताओ?

''देखो हाथी दादा! ये नीम मेरा दोस्त होकर भी कह रहा है कि तुम्हारे आम से अच्छी तो मेरी निंबौली है। भला इसमें मेरा क्या कसूर है। जैसी मेरी जड़ें होगी वैसे ही मेरे फल होंगे।''

हाथी आम की बात सुनकर सारा मामला समझ गया। उसने नीम को सबक सिखाते हुए कहा–''आम भैया! तुम्हारी जड़ें बहुत अच्छी हैं और तुम्हारे फल भी मीठे हैं, किन्तु तुम्हारी संगत ठीक नहीं हैं।''

''क्या मतलब तुम्हारा?'' नीम ने बीच में टोकते हुए पूछा। हाथी बोला–''मेरा मतलब सीधा–सादा है। आम सदा मीठा होता है किन्तु इस आम की जड़ों में तुम्हारी जड़े जुड़ी हैं इसीलिए तुम्हारा कड़वा स्वभाव इसके फलों में उतर आया है, और आम की मिठास तुम्हारी निंबौलियों में आ गयी है। तुम्हें तो आम का शुक्रिया अदा करना चाहिए कि, इसके कारण तुम्हारी कड़वीं निंबौलियां भी मीठी हो गयीं हैं, जिससे तुम्हारे भीतर घमण्ड आ गया है। इस बेचारे आम को देखो, जो तुमसे कुछ भी शिकायत नहीं कर रहा है। मीठे आम की संगत में कड़वा नीम मीठा इसलिए हुआ कि जिस वातावरण में अच्छे लोग होंगे, वहाँ के वातावरण में रहने वाले बुरे लोग भी अच्छे हो जाएंगे।''

हाथी की बात सुनकर सारे पशु–पक्षी एक साथ बोल उठे– ''हाथी दादा ठीक कह रहे हैं...हाँ....हाँ....हाथी दादा ठीक कह रहे हैं।''

नीम को वास्तविकता का पता चला तो वह बड़ा शर्मिन्दा हुआ। उसने अपनी गर्दन झुका ली। आम बोला–''गर्दन झुकने से कुछ नहीं होता मेरे दोस्त। गलती का अहसास होना ही सबसे बड़ी बात है। मैं तुम्हारे कारण कड़वा हुआ मुझे कोई दुःख नहीं। मुझे खुशी इस बात की है कि मेरा दोस्त नीम, मेरा सच्चा साथी फिर से बन गया। आओ गले मिल जाए।'' हवा ने आम के पेड़ की बात सुनकर एक जोरदार झोंका दिया कि नीम और आम आपस में फिर से मिल गए।

● अजमेर (राज.)

अजब पिटारी है

कविता : राजेन्द्र निशेश

पतझड़ की हो गई बिदाई,
अब बसंत की बारी है।
फूल खिल रहे महके-महके
मयूर, कोयल सब हैं चहके,
चिड़िया फुदके टहनी-टहनी
कैसी हँसती क्यारी है।
भँवरों में है मस्ती छाई
शीतल चलती है पुरवाई,
धरती ने भी प्यार लुटाया
तितली कैसी न्यारी है।
सूरज मंद-मंद मुस्काता
चन्दा अपने रूप दिखाता,
तारे सुन्दर गीत सुनाते
कुदरत अजब पिटारी है।

● चण्डीगढ़

।। बाल प्रस्तुति ।।

मेरा प्यारा विक्कू

कहानी : अलिशा सक्सेना

इस बार गर्मी की छुट्टी में मुझे नाना जी के यहाँ जाने की बहुत खुशी हो रही थी। क्योंकि मुझे मालूम था कि नाना जी ने एक छोटा सा पप्पी (कुत्ते का बच्चा) पाला है। मुझे पशु–पक्षी बहुत अच्छे लगते हैं। रास्ते भर में उसके बारे में सोचती रही। पर मेरी छोटी बहन अर्शी को जानवरों के बालों से एलर्जी थीं। जब हम नानाजी के घर पहुचे तो एक भूरे बालों वाला छोटा सा मोटा ताजा पप्पी दौड़ता हुआ आया भौकने लगा। मुझे थोड़ा सा डर लगा पर मेरे मामा ने मेरी उससे मित्रता करा दी। उसका नाम विक्कू था।

एक दिन दोपहर में मैं विक्कू और नानी छत पर सूखे कपड़े उतारने गये तो विक्कू भी हमारे साथ आ गया। आँधी आई थी इसलिए पड़ोसी के आम के पेड़ से कुछ आम टूटकर हमारी छत पर गिर गये थे। विक्कू उन्हें गेंद समझकर खेलने लगा। मैं भी उसके साथ खेलने लगी। अब हमारी विक्कू से दोस्ती हो गई थी। मुझे विक्कू बहुत अच्छा लगता था। वह अजनबियों को देखकर बहुत भौंकता था।

एक शाम को हमारे नाना जी आंगन में बैठे थे कि उनसे मिलने उनके कुछ दोस्त आ गए। विक्कू उन्हें देखकर जोर जोर से भौंकने लगा। इस पर नानाजी को बहुत गुस्सा आया उन्होंने पास पड़ी लकड़ी उठाई और दो तीन बार विक्कू को जोर से मार दिया। वह चिल्लाता हुआ अन्दर चला गया। शायद उसे जोर से लग गई थी। मुझे विक्कू पर बहुत दया आई। अब विक्कू किसी को देखकर नहीं भौंकता था, और गुमसुम सा बैठा रहता था। जब भी नानाजी आते वह सहम कर छुप जाता।

उस दिन दोपहर को हमारे अहाते में कुछ शरारती बच्चे घुस गए और कच्चे आम तोड़–तोड़ कर खाने लगे। साथ ही नानी के बगीचे के फूल भी तोड़ लिए। विक्कू उन्हें चुपचाप देखता रहा पर डर के मारे भौंका नहीं। तब नानी जी ने नाना जी को समझाया कि देखो विक्कू को हमने अपनी सुरक्षा के लिए पाला है। उसके साथ प्यार से बात किया करो। तब नाना जी ने विक्कू को बुलाया और प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरा ओर दूध पिलाया। विक्कू खुश हो गया और हम सब पर भौंकने लगा जोर–जोर से उछल कूद करने लगा। हम समझ गये कि विक्कू बहुत खुश है इसलिए मस्ती कर रहा है। हम सब उसके साथ खेलने लगे।

● अहमदाबाद (गुज.)

छोटे से बड़ा

भारतीय नववर्ष (वर्ष प्रतिपदा) के स्वागत में मंगल कलश सजाए गए हैं। आपको पता लगाना है इनमें कौन किससे बड़ा है।

(उत्तर इसी अंक में।)

ढूंढो तो जानें

● राजेश गुजर

बच्चो! होली के ९ रंगों के इन घड़ों के बाहर विभिन्न आकृतियाँ बनी हैं, लेकिन इनमें २ घड़ों की आकृतियाँ बिल्कुल एक जैसी है, ढूंढो कौन से हैं?

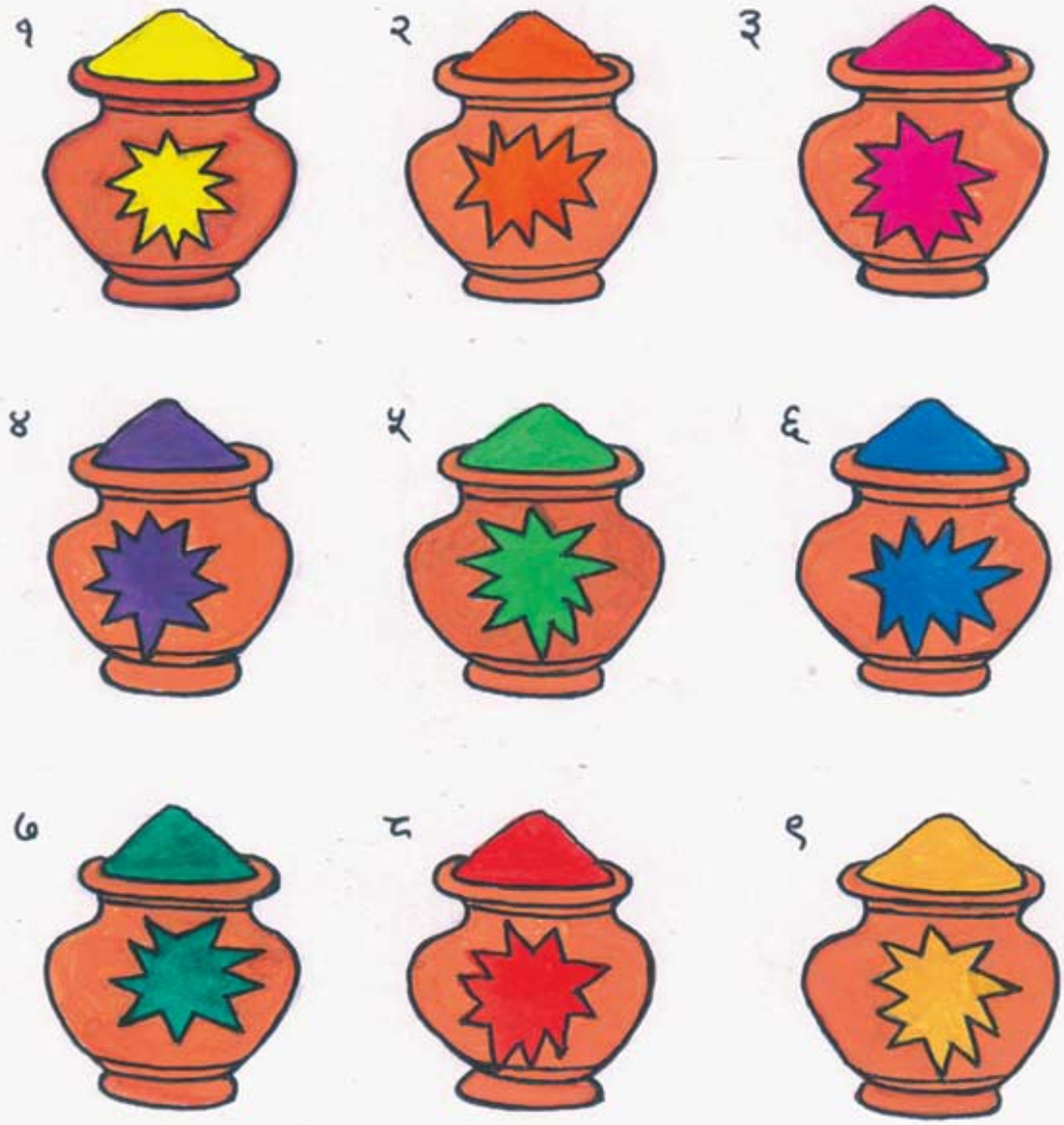

उत्तर – ५ व ९

।। बलिदान दिवस : २३मार्च ।।

भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव

वीरों की हिंसा

कहानी : शिवकुमार गोयल

वर्ष १९६७ की बात है।

गांधीजी से प्रमुख शिष्य आचार्य विनोवा भावे उन दिनों आचार्यों के एक समारोह में भाग लेने मुंगेर (बिहार) आए हुए थे। मुंगेर के उत्साही राष्ट्रभक्तों ने शहीदे आजम सरदार भगतसिंह की प्रतिमा एक सार्वजनिक स्थल पर स्थापित करने की तैयारी की हुई थी। कुछ युवा नेताओं ने बैठक में सुझाव रखा कि क्यों न संत विनोबा जी से ही मूर्ति का अनावरण करा दिया जाए। एक नेता ने कहा– 'गांधी जी भगतसिंह के हिंसा के रास्ते का विरोध करते थे। शायद विनोबा जी उनकी मूर्ति का अनावरण करने की स्वीकृति न दें।'

युवकों का प्रतिनिधि मंडल विनोबा जी के पास पहुंचा। हिचकिचाते हुए उनसे भगतसिंह की मूर्ति का अनावरण करने का अनुरोध किया गया। विनोबा जी उनके चेहरे को देखते ही समझ गए तथा बोले– 'गांधी जी कभी भी अपनी बात किसी पर थोपते नहीं थे। हम सबको अपनी इच्छा की पूर्ति का मौलिक अधिकार देते थे। दूसरी बात यह है कि मैंने तो सरदार भगतसिंह की प्रेरणा से ही घर–परिवार छोड़ा था। उनकी हिंसा वीरों की हिंसा थी। मैं मूर्ति का अनावरण कर उनके ऋण से उऋण हो जाऊंगा।' और उन्होंने गर्व के साथ भगतसिंह की मूर्ति का अनावरण किया।

• पिलखुआ (उ.प्र.)

रंगों की पिचकारी

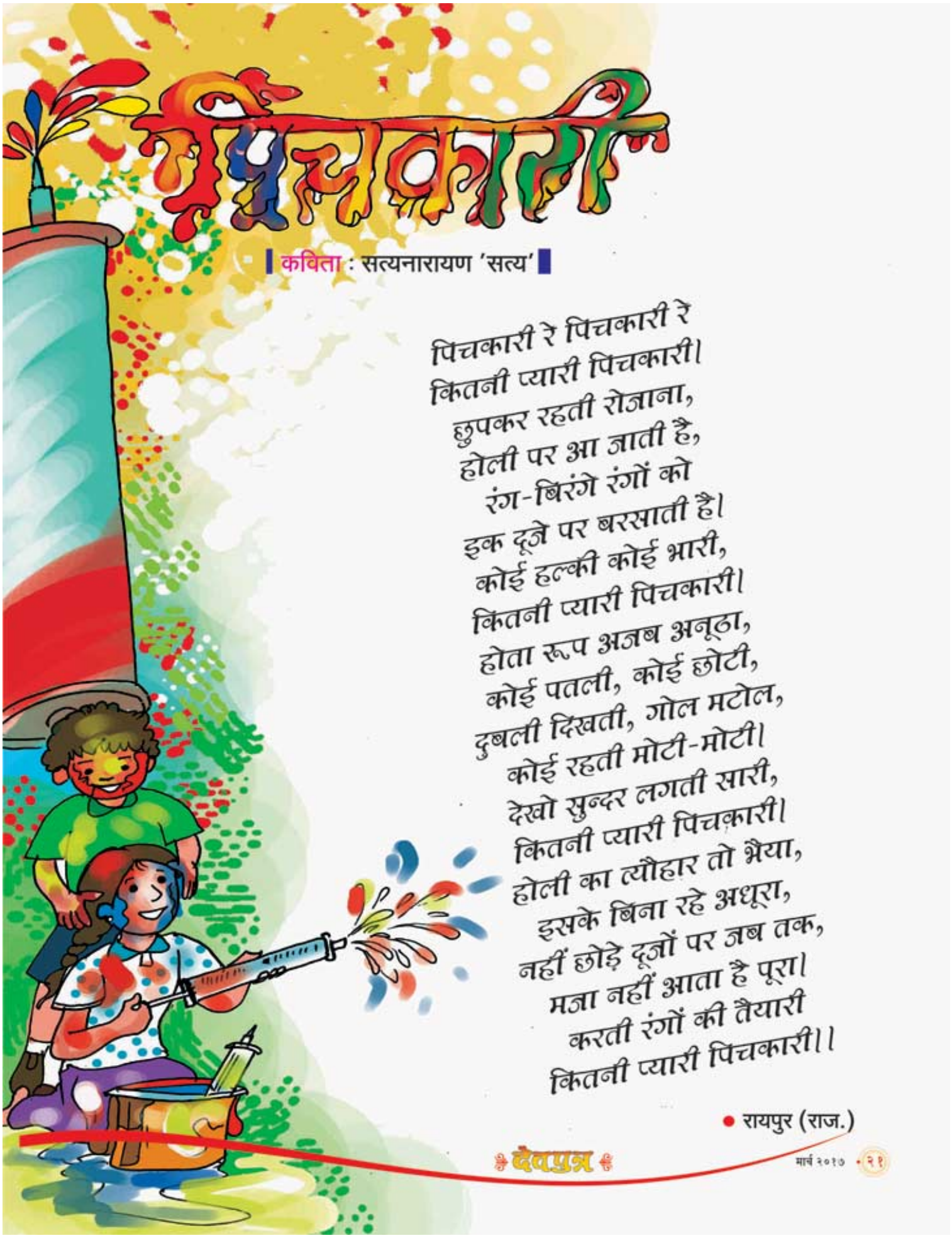

पिचकारी

कविता : सत्यनारायण 'सत्य'

पिचकारी रे पिचकारी रे
कितनी प्यारी पिचकारी।
छुपकर रहती रोजाना,
होली पर आ जाती है,
रंग-बिरंगे रंगों को
इक दूजे पर बरसाती है।
कोई हल्की कोई भारी,
कितनी प्यारी पिचकारी।
होता रूप अजब अनूठा,
कोई पतली, कोई छोटी,
दुबली दिखती, गोल मटोल,
कोई रहती मोटी-मोटी।
देखो सुन्दर लगती सारी,
कितनी प्यारी पिचकारी।
होली का त्यौहार तो भैया,
इसके बिना रहे अधूरा,
नहीं छोड़े दूजों पर जब तक,
मजा नहीं आता है पूरा।
करती रंगों की तैयारी
कितनी प्यारी पिचकारी।।

• रायपुर (राज.)

भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन की शिक्षा

स्तम्भ : प्रो.(डॉ.)जमनालाल बायती

भारत सरकार द्वारा पूना में सन् १९६४ में स्थापित भारतीय फिल्म तथा टेलिविजन संस्थान अपने प्रकार का पहला एवं महत्वपूर्ण संस्थान है। इसकी स्थापना का प्रमुख उद्देश्य था–भारतीय सिनेमा उद्योग के लिए उच्च प्रशिक्षित तकनीशियन तथा दक्षता प्राप्त कलाकार उपलब्ध कराना, जिससे इस उद्योग का नाम स्तर ऊँचा हो एवं कला का स्तर सुधारा जा सके।

इस संस्थान से शिक्षा प्राप्त कई पूर्व विद्यार्थी फिल्म डिवीजन में फिल्में बना रहें हैं, वे राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम, भारतीय अन्तरिक्ष अनुसंधान संगठन, केन्द्रीय शैक्षिक तकनीकी संस्थान तथा एन.सी.ई.आर.टी. सार्वजनिक तथा निजी संस्थानों में महत्वपूर्ण पदों पर नियोजित हैं। इस संस्थान ने क्षेत्रीय भाषाओं में बनने वाली फिल्मों में भी महत्वपूर्ण पदों पर नियोजित हैं। इस संस्थान ने क्षेत्रीय भाषाओं में बनने वाली फिल्मों में भी महत्वपूर्ण योगदान किया है। उड़िया, पंजाबी, तमिल, मलयालम, कन्नड़ आदि भाषा की श्रेष्ठ फिल्मों के बनाने वाले इस संस्थान के विद्यार्थी रहे हैं। वर्ष १९९० में गुजराती, हिन्दी, मलयालम, उड़िया, पंजाबी, कन्नड़ भाषा में राष्ट्रीय पुरस्कार पाने वाली फिल्म निर्माताओं ने इसी संस्थान से शिक्षा दीक्षा पाई हैं, कला एवं अभिनय की बारीकियां सीखी हैं।

पाठ्यक्रम का शीर्षक एवं योग्यता :

- चलचित्र में डिप्लोमा पाठ्यक्रम : +२ स्तर पर भौतिक तथा रसायन विज्ञान सहित परीक्षा उत्तीर्ण।
- दृष्यांकन में डिप्लोमा पाठ्यक्रम : भौतिक विज्ञान तथा इलेक्ट्रोनिक्स के साथ स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण।
- फिल्म सम्पादन में डिप्लोमा पाठ्यक्रम : किसी भी संकाय की स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण या समकक्ष योग्यता।
- निर्माण (फिल्म तथा दूरदर्शन) में डिप्लोमा पाठ्यक्रम : उपर्युक्तानुसार।
- सिनिक डिजाइन (फिल्म तथा दूरदर्शन में डिप्लोमा पाठ्यक्रम) : चित्रकला या मूर्तिकला या ग्राफिक या प्रयुक्त कला में उपाधि या डिप्लोमा, स्थापत्य कला में उपाधि या डिप्लोमा परीक्षा उत्तीर्ण।
- निर्देशन में पोस्ट डिप्लोमा पाठ्यक्रम : सिनेमा की किसी शाखा में विश्वविद्यालय की उपाधि या डिप्लोमा या मान्य समकक्ष योग्यता।
- अभिनय का अल्पावधि (फिल्म तथा टेलीविजन) प्रमाण पत्र पाठ्यक्रम : थियेटर या मंच कला की अभिनय विशेषज्ञता उपाधि या मान्यता प्राप्त समकक्ष योग्यता। (यह पाठ्यक्रम ६ माह की अवधि का है तथा इसमें भारतीय २० विद्यार्थी प्रवेश पा सकते हैं।)

इस संस्थान के विद्यार्थी इमो सिंग द्वारा तैयार फिल्म को भारत के ३९वें राष्ट्रीय फिल्म समारोह में पुरस्कार के लिये चुना गया। यह उन ३० फिल्मों में से एक है, जिनका अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर टोकियो में १९९२ में प्रदर्शन हुआ था।

दूरदर्शन के क्षेत्र में योगदान –

इस संस्थान ने दूरदर्शन के कार्यक्रमों के विकास में भी

महत्वपूर्ण योगदान दिया है। यहाँ भारतीय सूचना सेवा के अधिकारियों के लिए दूरदर्शन के छोटे अभिमुखीकरण प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। संस्थान के कई पूर्व छात्र दूरदर्शन में महत्त्वपूर्ण पदों पर नियोजित हैं तथा विकास में योगदान कर रहे हैं। आज के मल्टी चैनल के युग में संस्थान से प्रशिक्षित व्यक्ति कारगर एवं प्रभावी भूमिका निभा रहे हैं।

संस्थान परिसर में प्रभात म्युजियम कलाकारों की पोषाक, उनके गहने, अन्य सामान, चित्र कला के नमूने आदि को सुरक्षित रखता है तथा आवश्यकता के समय इनका प्रदर्शन भी करता है। प्रभात स्टुडियो के साथ की गई महत्त्वपूर्ण संविदाएं भी यहाँ देखी जा सकती हैं।

प्रवेश प्रक्रिया –

भारतीय फिल्म एवं दूरदर्शन संस्थान का विद्यार्थी बनने के लिए अभ्यार्थी को परीक्षाओं तथा कसौटियों से गुजरना पड़ता है। विदेशी विद्यार्थियों का अपनी सरकार से नामित होना आवश्यक है और उन्हीं सरकारों से उनकी छात्रवृत्ति स्वीकृत होनी चाहिए। प्रवेश के लिए आयु सीमा का कोई बंधन नहीं है। प्रतियोगी प्रवेश परीक्षा में चार प्रश्न होते हैं–

- सामान्य ज्ञान का सामान्य बौद्धिक क्षमता – इस प्रश्न में सभी विद्यार्थियों को सम्मिलित होना अनिवार्य है।
- विशिष्ट क्षेत्र परीक्षा– फिल्म उद्योग में कॅरियर बनाने वालों के लिए।
- सामान्य विज्ञान – केवल चलचित्र छायांकन डिप्लोमा पाठ्यक्रम में प्रवेश चाहने वालों के लिए।
- भौतिक (पदार्थ) विज्ञान तथ गणित – केवल छायांकन में डिप्लोमा पाठ्यक्रम में प्रवेश चाहने वाले अभ्यर्थियों के लिए।

इन परीक्षाओं का आयोजन अहमदाबाद, इलाहाबाद, बैंगलुरु, भुवनेश्वर, मुम्बई, कलकत्ता, चण्डीगढ़, गुवाहटी, हैदराबाद, चेन्नई, तिरुवनन्तपुरम् तथा नई दिल्ली में प्रायः रविवार को होता है।

प्रथम चरण की परीक्षा उत्तीर्ण करने वालों को द्वितीय चरण की परीक्षा में बैठना होता है। यह परीक्षा संस्थान परिसर में ही होगी इस परीक्षा के लिए संस्थान में चार दिवसीय सिनेमा अभिविन्यास के पाठ् यक्रम की जानकारी दी जाएगी, पढ़ाया जाएगा यह पाठ्यक्रम ऐच्छिक है पर इसके बाद जो अभिरुचि परीक्षा होगी– वह इसी पाठ्यक्रम पर आधारित होगी। इसलिए सिनेमा उद्योग में रोजगार चाहने के इच्छुक सभी आशार्थियों को इस सिनेमा अभिविन्यास शिक्षण के कार्यक्रम में भाग लेना चाहिए। सभी आशार्थियों के निवास का प्रबंध संस्थान अपने परिसर में बिना कोई शुल्क लिए करता है। अभिविन्यास पाठ्यक्रम के बाद अभिरुचि परीक्षा का आयोजन होता है। इसमें उत्तीर्ण विद्यार्थियों का साक्षात्कार होगा। व्यैक्तिक भेंट होगी तथा प्रवेश को अन्तिम रूप दिया जाएगा। इन सभी पाठ्यक्रमों में १०–१० विद्यार्थियों को प्रवेश दिया जाता है, जिनमें अधिकतम दो छात्र विदेशी हो सकते हैं। प्रत्येक पाठ्यक्रम ४ सत्र या २ वर्ष का है जिसमें से आरम्भिक एक सत्र सभी पाठ्यक्रमों के लिए सामान्य एवं समन्वित कार्यक्रम का है। इस अवधि में चलचित्र तथा फिल्म सौन्दर्य बोध की बुनियादी शिक्षा दी जाती है। शेष तीन सत्रों में विशिष्ट पाठ्यक्रमों का प्रशिक्षण दिया जाता है।

अकादमिक सत्र जनवरी से आरम्भ होता है तथा द्वितीय सत्र दिसम्बर में समाप्त होता है।

अतिथि प्राध्यापक –

हर वर्ष संस्थान राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त अपने क्षेत्र के शिक्षकों, फिल्म निर्माताओं को व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित करता है तथा अपने प्रशिक्षणार्थियों की उनसे भेंट करवाता है। वर्ष १९९४ में जीन क्लौड़े केरियर, वुल्फंगेंग, लेंग्स फील्ड, गिटानी, जन्सी आदि आए तथा १९९५ में हंगरी के सिने जगत के प्रसिद्ध इस्तबाल माल आए उन्होंने ६ सप्ताह के एक प्रशिक्षण शिविर का संचालन भी किया। इनके सिवाय इस क्षेत्र के कई भारतीय कलाकारों ने भी संस्थान को योगदान किया है, मार्गदर्शन कर सहायता पहुँचाई है। वे कक्षाओं में अध्यापन करते हैं, कला की अभिनय की बारीकियां समझाते हैं तथा इस भांति संस्थान के विद्यार्थियों को आगे बढ़ने में योगदान देते हैं।

● भीलवाड़ा (राज.)

।। हास्य कथा ।।

बेचारा सौदागर

कहानी : दीपांशु जैन

एक था सौदागर। वह एक देश से दूसरे देश जा–जाकर सामान बेचता खरीदता था। कई महीनों बाद ढेरों रुपया इकट्ठा करके अपने देश वापस लौट आता था। इस तरह उसे तरह–तरह के देशों में तरह–तरह के लोग मिलते, वहां की अजीब–अजीब बातें देखने को मिलती थीं।

एक बार वह ऐसे नगर में पहुंचा जहां के लोग बहुत अमीर थे। वहां उसकी चीजों के दुगने–तिगुने दाम मिले। दिन भर उसने घूम–घूमकर खूब पैसा कमाया। रात होते वह थक कर चूर हो गया और भूख के मारे उसका बुरा हाल था। लेकिन उसके अचरज की सीमा न रही, जब उसने देखा कि सारे बाजार में खाने–पीने की कोई दुकान नहीं है। बहुत पूछताछ और खोजबीन के बाद उसे एक जगह मिली। उस पर लिखा था– ''सोच समझकर खाओ होटल'' उस विचित्र नाम वाले होटल के कायदे भी अजब थे। वहां कोई आदमी सिर्फ एक बार आदेश दे सकता था, जितनी चीजें मंगाई जाती उसे सब खाना पड़ता था । कुछ भी छोड़ने या दोबारा मंगाने पर एक हजार अशर्फी का जुर्माना देना पड़ता था। सौदागर ने यह पढ़ा, वह घबराया तो बहुत लेकिन भूख इतनी ज्यादा थी कि कोई और चारा न था। आखिर डरते–डरते होटल में घुस गया।

होटल के मालिक ने पहला सवाल यही किया कि तुमने हमारे नियम पढ़ लिए है न! जब उसने हां कहा, तभी उसने आदेश लिया। पता लगा कि उस दिन सिर्फ शकरपारे बने हुए थे। सौदागर उस जगह के लिए नया था। उसने शकरपारे का नाम कभी सुना भी न था। समझ में न आया कितने मंगवाये जो पेट भी भर जाए और जुर्माना भी न देना पड़े। खूब सोच समझकर उसने दस शकरपारे मंगवाए। थोड़ी देर बाद एक बहुत ही सुन्दर तश्तरी में चांदी के वर्क से ढके शकरपारे हाजिर कर दिए गए। लेकिन सौदागर ने देखा ये तो वह एक ग्रास में ही खा

जाएगा। पर क्या करता? एक हजार अशर्फी का दंड देने से तो भूखा रह जाना ही अच्छा था। आखिर मन मार कर इतने पर ही उसे सब्र करना पड़ा।

अगले दिन उसकी और भी ज्यादा आमदनी हुई। लेकिन रात आते ही फिर खाने की समस्या आई। लेकिन अब वह घबराया नहीं। उसने उसी होटल में आकर तपाक से पूछा– ''क्या बना है?''

जवाब मिला– ''सेव।''

''कोई बात नहीं। सौदागर ने कहा– ''सौ ले आओ। और उसने मन ही मन सोच अब देखता हूं कैसे पेट नहीं भरता? कितनी भी छोटी चीज होगी, सौ में तो पेट भरेगा ही, लेकिन जब उसी सुंदर सी तश्तरी में, लेकिन इस बार सोने के वर्क से सजे हुए सेव ला कर रखे गए तो उसने फिर सिर पीट लिया। बेसन के बने बारीक–बारीक सेव थे, गिनती में पूरे सौ। लेकिन बेचारा सौदागर क्या करता, मन मार कर रह गया।

उसकी कुछ चीजें बिकनी बाकी थीं और कीमत भी खूब मिल रही थी, इसलिए अगले दिन फिर उसे उसी शहर में रहना पड़ा। फिर रात आई, और भूख तो उसकी पिछले तीन दिन से शांत ही नहीं हो पाई थी। भूख के मारे बेहाल वह फिर उसी होटल में आया। आज उसने तय कर रखा था कि वह भूखा नहीं उठेगा और दंड भी नहीं देगा। आखिर होटलवाला कब तक उससे चालाकी दिखाएगा, यह सोच कर उसने बिना पूछे कि क्या बना है, आदेश दिया– ''एक हजार ले आओ।''

उस दिन मालपुए बने थे और आर्डर मिलते ही गरम–गरम पूरे एक हजार मालपुए एक बहुत बड़े थाल में उसके सामने ला कर रख दिए गए। गुलाबी रंग, घी टपकता हुआ और बहुत ही स्वादिष्ट खुशबू उनमें से आ रही थी। यह सब देखकर पहले तो तीन दिन में भूखे सौदागर की लार बहन लगी, लेकिन जब भरा हुआ इतना बड़ा थाल देखा, तो उसके होश उड़ गए। एक हजार अशर्फी जुर्माने की बात उसकी आंखों के आगे घूम गई। हाय, अब क्या होगा? वह घबरा कर पहले तो खाने बैठ गया और जब न खा सका, तो सिर पर पैर रख ऐसे भागा कि शहर के बाहर जा कर ही उसने दम लिया।

● भवानीमंडी (राज.)

कुछ तुम समझे कुछ हम समझे

लघुकथा : राजीव नामदेव

एक राहगीर अपने माल की गठरी सर पे रखकर कहीं दूसरे गाँव जा रहा था, इतने में पीछे से एक घुड़सवार पास से निकला, गठरी भारी थी, और वह राहगीर भी कुछ थक गया था। उसने घुड़सवार से कहा– ''कि तुम अपने घोड़े पर मेरी यह गठरी गाँव तक रख कर चलो, उसने मना कर दिया और आगे निकल गया।

इधर घुड़सवार ने सोचा कि बेकार में ही हाथ आया माल छोड़ दिया, उधर राहगीर ने भी यह सोचा कि यह अच्छा ही हुआ कि उसने गठरी नहीं लादी, कहीं वह ठरी लेकर ही भाग जाता तो, मैं उसे कहाँ ढूढता फिरता।

संयोग से कुछ देर बाद दोनों की फिर से मुलाकात हो गयी, इस बार उस घुड़सवार ने राहगीर से कहा कि इधर लाओं और मेरे घोड़े पर गठरी रख लो, तुम बहुत थक गए होंगे। राहगीर ने जवाब दिया– ''बस भाई अब रहने दो। कुछ तुम समझे कुछ हम समझे।

● टीकमगढ़ (म.प्र.)

आपकी पाती

देवपुत्र का नव. २०१६ का अंक प्राप्त हुआ। हार्दिक आभार। देवपुत्र बच्चों को स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करती एक स्तरीय पत्रिका है। यह बच्चों के चरित्र निर्माण में सहायक पत्रिका है अतः सभी विद्यालयों एवं पुस्तकालयों में इसको पहुँचाने के प्रयास किए जाने चाहिए।

इस अंक में सभी कहानी, कविता, आलेख बच्चों को नैतिक शिक्षा देते हुए जीवन को सुन्दर बनाने की प्रेरणा देते हैं। विषय के अनुरूप चित्र मनभावन हैं। रचनाएँ पूर्णतया बाल मनोविज्ञान के अनुरूप हैं। बालोपयोगी पत्रिका के नियमित प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई।

◀◀ सुरेश चंद्र 'सर्वहारा' कोटा (राज.)

देवपुत्र का अंक प्राप्त हुआ। मुझे देवपुत्र बहुत प्यारी लगती इसमें कहानी नाट्य, कविता, बहुत अच्छे अच्छे भाते, चित्र पहेली भरने का मुझे इस अंक में चुटकुले बहुत अच्छे लगे। मैंने अपने विद्यालय के भैया का नाम पढ़ा मुझे अच्छा लगा।

◀◀ राधिका शर्मा, कसारी (म.प्र.)

देवपुत्र का जनवरी अंक भी अतीत की तरह बालमीत है। अपने दो सचित्र विशेष काव्यात्मक संदेश के माध्यम से मुखपृष्ठ बहुत आकृष्ट करता है। संपादकीय अपनी बात में तो आपने यह उजास सा उजागर कर दिया है कि सामयिक समस्या के समाधान का स्वप्रेरित उपाय खोजने में बच्चे अपने बड़ों को भी प्रेरणा प्रदान कर सकते हैं। संस्कार के सरोकार से होनहार बिरवान को जोड़ने का आपका यह अनवरत व्रत चाहने और सराहने योग्य है। कृपया ऐसी ही नित नई सारगर्भित सामग्री परोसते रहें।

◀◀ राजा चौरसिया, उमरियापान (म.प्र.)

।। बाल प्रस्तुति ।।

होली

कविता : सुमित शर्मा

बड़े प्यार से अम्मा बोली।
खूब मनाओ भैया होली।।
नहीं करेंगे कभी कुसंग।
डालो सभी परस्पर रंग।।
एक वर्ष में होली आई।
जी भर खेलो खाओ मिठाई।।
ध्यान लगाकर सुनो पढ़ो।
नये नये सोपान चढ़ो।।
बच्चे शोर मचाये होली।
उछले कूदें खेलें होली।।
बड़े प्यार से अम्मा बोली।
खूब मनाओ भैया होली।।

● मिहोना (म.प्र.)

सोन परी की उदारता

लघु कथा : अर्चना ललित मंडलोई

सर्दियों का मौसम था। चंपक वन में चारों ओर जोर-शोर से बसंत पंचमी की तैयारियां चल रही थी। रानी शेरनी ने सभी को बुलाकर विशेष रूप से प्रबंध करने के निर्देश दिए थे। सभी अपने-अपने विचार बता रहे थे। सबने देखा एक सुंदर परी है। इस बार चंपक वन को उनकी एकता और भाईचारे के लिए चुना गया है। मैं आप लोगों से प्रसन्न होकर आपको पुरस्कार देने आई हूं। अरे वाह, चू चू चूहा व मीकू खरगोश खुशी से चिल्ला उठे। सभी ने खुश होकर परी रानी का अभिवादन किया। गरुड़ दादा ने पंख फैलाकर अपनी प्रसन्नता दिखाई। सोन परी ने रानी शेरनी को एक खूबसूरत सा मुकुट दिया । मीकू खरगोश भी बहुत खुश था उसे उपहार में खूबसूरत कोट जो मिला था। आज सोन परी वापस जाने वाली थी। सभी विदा करने भारी मन से इकट्ठा हुए थे। सोन परी ने खुश होकर कहा कि आप लोगों के प्यार को देखकर मैंने वसंत पंचमी यहीं चंपक वन में मनाने का फैसला किया है। यह बात सुनकर सभी खुशी से झूम उठे।

● इन्दौर (म.प्र.)

अरुणोदय

पूना से ५० मील दूर शिवनेरी के पहाड़ी दुर्ग में माता जीजाबाई शिशु शिवा को लोरियां ''सुना सुनाकर सुलाने की'' कोशिश कर रही थीं। उनका ध्यान बालक पर था किन्तु मन भविष्य की गहराइयों में भटक रहा था। वे मनौती मान रही थीं कि शिवा बड़ा होकर देश और धर्म का उद्धारक बने, हिन्दु जाति की बेड़ियां काट कर मुक्तिदाता बने।

शिवाजी जब गर्भ में ही थे तो अचानक शाहजी को एक अभियान पर जाना पड़ गया और जब शिवा ने पृथ्वी पर जन्म लिया तो शाह जी युद्धों में व्यस्त थे।

शिशिर ऋतु में फाल्गुन कृष्ण तृतीया शालिवाहन शके १५५१ (१९ फरवरी १६३०) को शिवाजी का जन्म हुआ तो प्राची में अरुणोदय हो रहा था।

खुशियां मनायी गई। उत्सव हुए, मिठाइयां बांटी गई, ढोल–ताशे, तुरही आदि बाजे बजाए गए।

नामकरण का दिन आया तो माता जीजाबाई ने बालक के कान में नाम का उच्चारण किया 'शिवबा'– शिवनेरी देवी की कृपा से प्राप्त पुत्ररत्न का नाम भी देवी के नाम पर रखा गया।

जीजाबाई शिवाजी को गोद में लेकर शिवनेरी दुर्ग

की प्राचीर पर सायं–प्रभात घूमतीं और दूरस्थ पहाड़ियों के पार उनकी निगाहें दौड़–दौड़ जाती थी। वह सारा क्षेत्र उन दिनों आततायी मुगलों के पैरों द्वारा रौंदा पड़ा और इस अरुणोदय ने वास्तव में भारत भूमि पर जाज्वल्यमान प्रकाश बिखेर दिया था।

यायावर

दक्षिण भारत में मारकाट मची थी। यद्यपि मुर्तजा निजामशाह ने मलिक अकबर के पुत्र फतह खां को अपना मंत्री बनाया था। फतह खां उससे निजाम राज्य छीनने पर आमादा हो गया। उसने मुर्तजा को बंदी बना लिया और कुछ दिन बाद उसे मार डाला।

उधर शाहजहां तो यही चाहता ही था। उसने फतेह खां का समर्थन प्राप्त करने को उससे कहा कि शाहजी की जागीर उसे दे देंगे। शाहजी मुगलों के पक्षधर थे, तुरंत उनके शिविर से अलग हो गए और उन्होंने मुगलों के दूसरे समर्थक आदिलशाह को चेतावनी दी कि वे भी मुगलों का साथ छोड़ दें।

आदिल शाह भी शाह जी के साथ आ गया और दोनों ने मिलकर मुगलों से टक्कर ली। हुसैन निजामशाह और फतहखाँ बंदी बना लिए गए। शाहजी ने तब निजाम शाही परिवार के उक्त मुर्तजा को निजाम की गद्दी पर बैठाया था।

शाहजहां इसी कारण शाहजी से अप्रसन्न हो गया और उसने त्र्यम्बक दुर्ग के सूबेदार मल्हार खाँ को सुझाव दिया कि शाहजी को रास्ते पर लाने के हेतु जीजाबाई और शिवाजी का अपहरण कर लिया जाये। मल्हार खाँ शिवनेरी आया। बहाना था जीजाबाई के दर्शनों का।

जीजाबाई स्वयं बड़ी चतुर महिला थीं अतः मल्हार के आने के पूर्व ही उन्होंने शिवाजी को शिवनेरी से हटा दिया। मल्हार ने आकर जीजाबाई को बन्दी बना लिया मगर उनके चाचा जगदेव जाधव के बीच में पड़ने पर उन्हें छोड़ कर लौट गया।

स्वामिभक्त सेवक शिवाजी को लेकर पहाड़ की कन्दराओं और उपत्यकाओं में छिपते–घूमते फिरते रहे। इन तीन वर्षों में शिवाजी ने उस क्षेत्र का चप्पा–चप्पा देख समझ लिया, और यही ज्ञान आगे चलकर उनके हेतु वरदान साबित हुआ।

शिवाजी ने अपने उस किशोरकाल में निर्धन वनवासियों, ग्रामीणों की दुर्दशा देखी। उसने उन्हें प्रेरणा ही नहीं दी, बल्कि संकल्प शक्ति भी प्रदान की।

तीन वर्ष भटकने के बाद माता जीजाबाई भी अपने पुत्र से आ मिलीं। उधर मुगलों और बीजापुर के बीच लड़ाई भी धीमी पड़ गयी थी और शिवाजी को पकड़ने में असफल होकर मुगल अपना सा मुंह लेकर रह गये।

(निरंतर अगले अंक में...)

।। समाचार ।।

अश्वनी कुमार पाठक सम्मानित

सिहोरा। नगर के वरिष्ठ कवि, बाल साहित्यकार अश्वनी कुमार पाठक को संस्कारधानी जबलपुर की साहियित्क, सांस्कृतिक सामाजिक संस्था कादम्बरी ने सम्मानित किया है।

शहीद स्मारक में संस्था के तत्वावधान में आयोजित अखिल भारतीय साहित्यकार पत्रकार सम्मान समारोह में मुख्य अतिथि रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. कपिल देव मिश्र एवं अध्यक्ष आचार्य कृष्णकान्त चतुर्वेदी के कर कमलों से बाल साहित्यकार अश्वनी कुमार पाठक को, उनकी बहु आयामी हिन्दी सेवाओं तथा बाल साहित्य सृजन के परिप्रेक्ष्य में स्व. मानकलाल शिवहरे सम्मान से अलंकृत करते हुए सम्मान–पत्र, शाल और सम्मान राशि के रूप में ग्यारह हजार का चैक प्रदान किया गया।

पहेलियां

जयेन्द्र

छोटा हूं पर बड़ा कहलाता,
सदा दही की नदी नहाता।

***

अन्त कटे बगुला बन जाती,
आदि कटे तो हाथी।
गाय भैंस न समझो मुझको,
फिर भी दूध पिलाती।।

प्रथम कटे तो समय का पल,
अन्त कटे तो बनता पीप।
भारत का एक विशाल वृक्ष में
पवित्र वृक्ष के रूप में है पहचान।।

***

जल में पली, अग्नि से जली,
झाड़-पोंछकर घी से मली।
गोल-गोल थाली में पड़ी,
चैन पड़ा जब पेट में पड़ी।।

उत्तर - दही बड़ा, बकरी, पीपल, रोटी

• भैसोदामंडी (म.प्र.)

अंक योग

देवांशु वत्स

					२६
	२		४		२३
६			६	१	३१
		४			२०
	८			२	२७
३		५		७	२५
२७	२४	२६	२५	२१	२८

खेलने के नियम

इस पहेली में आपको सफेद रिक्त खानों में सही अंक भरने हैं। रंगीन खाने में लिखे अंक सफेद खानों, के ऊपर से नीचे, बाएं से दाएं और तिरछे खानों के अंकों का योग है। सफेद खानों में आप १ से ९ तक के अंक ही प्रयोग में ला सकते है।

(उत्तर इसी अंक में।)

नववर्ष की तैयारी

● राजेश गुजर

३ बच्चों को गुड़ी पड़वा के दिन इन्हें अपने घर में नीचे बनी ६ वस्तुओं से गुड़ी लगाना है। बच्चो! आपको इन ६ वस्तुओं को ३ बराबर भागों में विभाजित करना है। कि प्रत्येक भाग में ६ वस्तुएँ बराबर आ जाए। उठाइए अपनी कलम और करिए दिमागी कसरत।

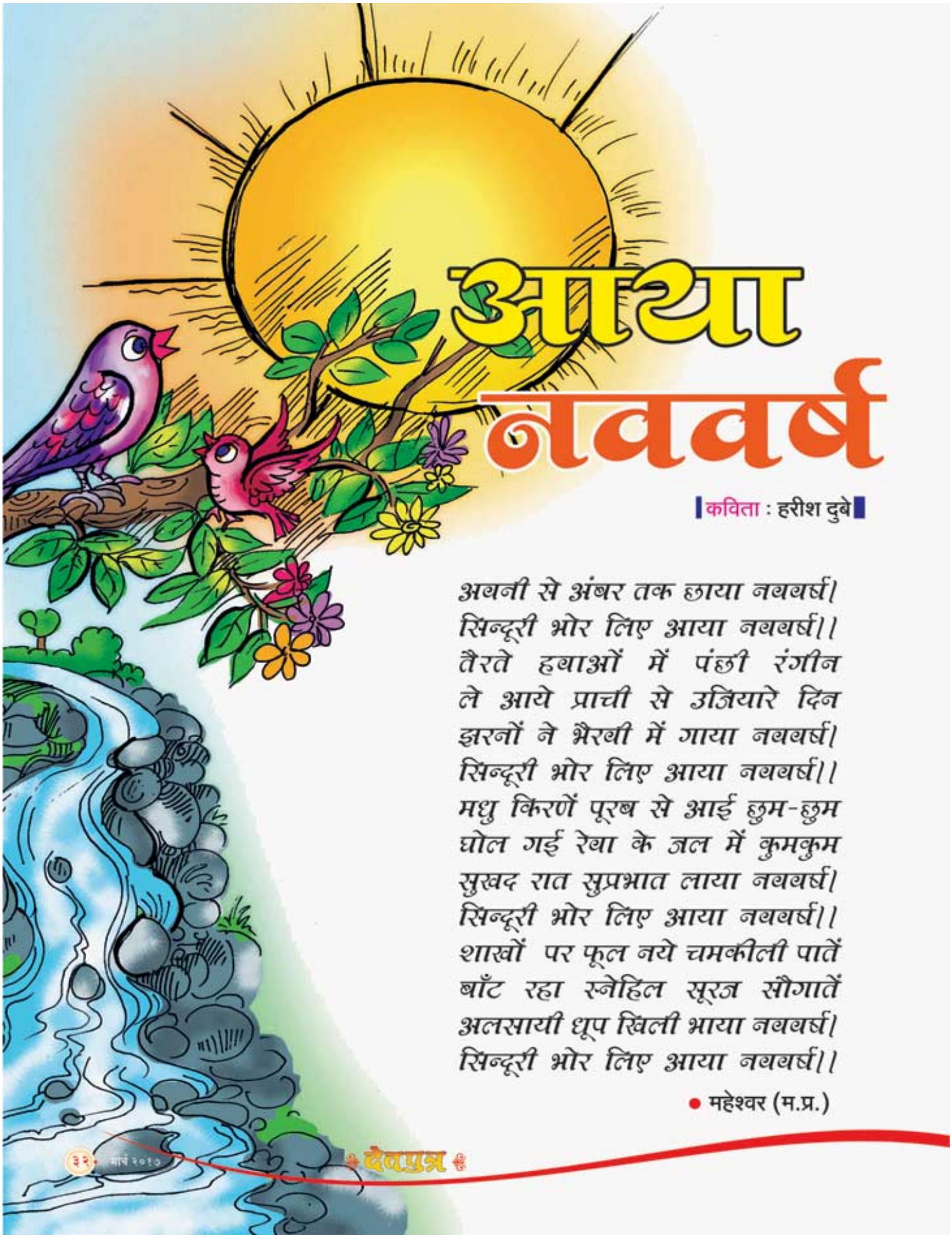

आया नववर्ष

कविता : हरीश दुबे

अवनी से अंबर तक छाया नववर्ष।
सिन्दूरी भोर लिए आया नववर्ष।।
तैरते हवाओं में पंछी रंगीन
ले आये प्राची से उजियारे दिन
झरनों ने भैरवी में गाया नववर्ष।
सिन्दूरी भोर लिए आया नववर्ष।।
मधु किरणें पूरब से आई छुम-छुम
घोल गई रेवा के जल में कुमकुम
सुखद रात सुप्रभात लाया नववर्ष।
सिन्दूरी भोर लिए आया नववर्ष।।
शाखों पर फूल नये चमकीली पातें
बाँट रहा स्नेहिल सूरज सौगातें
अलसायी धूप खिली भाया नववर्ष।
सिन्दूरी भोर लिए आया नववर्ष।।

● महेश्वर (म.प्र.)

।। जानकारी ।।

क्या है मधुमास ?

हिन्दी मासों को हम प्रायः चैत्र, वैशाख से फाल्गुन पर्यन्त इन बारह नामों से ही जानते हैं लेकिन अनेक कविताओं और साहित्य की दूसरी विधाओं में 'मधुमास' का नाम बार बार आता है। यह मधुमास बारह हिन्दी मासों में तो आता नहीं तब यह क्या है? यह जिज्ञासा होना स्वाभाविक ही है।

चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़ आदि बारह हिन्दी महिनों की भांति ही बारह वैदिक मास भी है जिसमें प्रथम है 'मधु'। इसके बाद के महिनों के नाम कम ही लोग जानते हैं- प्रत्येक ऋतु दो-दो माह की होती है। यह तो आप जानते ही होंगे कि संसार में केवल अपने देश में ही छः ऋतुएं होती हैं वैदिक मासों के संदर्भ में देखें तो १. बसन्त ऋतु- मधु, और माधव २. ग्रीष्म ऋतु-शुक्र व शुचि ३. वर्षा ऋतु -नभस् और नभस्य ४. शरद् ऋतु- इष और ऊर्ज ५. हेमन्त ऋतु- सहस और सहस्य तथा ६. शिशिर ऋतु -तपस् और तपस्य मासों में होती है।

हिन्दी मासों में ऋतुओं का यह क्रम फाल्गुन से प्रारंभ हो जाता है। तो आप समझ गए न-

तुलसी दास जी ने लिखा -

नौमी तिथि मधुमास पुनीता।
सुकल पक्ष अभिजित हरिप्रीता।

राम का जन्म मधुमास अर्थात् चैत्र मास की शुक्लपक्ष की नवमी तिथि को अभिजित नक्षत्र में मध्य दिवस (दिन के बारह बजे) अयोध्यापुरी में हुआ था।

आओ, मनाएं प्रतिपदा

कविता : अशोक शास्त्री 'अनंत'

चाहते हम हर तरफ ही हर्ष हो उत्कर्ष हो,
साधना, आराधना, तप-त्यागमय नववर्ष हो।
हो जो सच्चा और अच्छा पथ वही अपनाएं हम,
सबके प्रति हो सहृदयता कपट मन ना लाएं हम।
सबकी धरती, हवा, पानी और यह वातावरण,
संयमित जीवन रहे और धर्ममय हो आचरण।
खुद जिएं औरों को भी जीने का दें हम हौंसला,
पेड़-पौधों, फूल, फल, पक्षी बनावें नित घोंसला।
मानवी मूल्यों में ही विश्वास अपना हो सदा,
सारे भारतवासी मिलकर के मनाएं प्रतिप्रदा।

• इन्दौर (म.प्र.)

विक्रमादित्य

जिनका संवत् आज भी प्रचलित है

महाराज विक्रमादित्य बड़े पराक्रमी, यशस्वी, विद्वान, वीर एवं प्रजावत्सल शासक थे। इन्होंने विक्रम संवत् को शास्त्रीय विधि से प्रचलित किया। कहा जाता है कि उन्होंने अपनी सम्पूर्ण प्रजा के सम्पूर्ण ऋण को अपने राजकोष से चुकाकर प्रजा को ऋण मुक्त किया था।

संयमी राजा विक्रमादित्य अपने पीने के लिए जल भी स्वयं क्षिप्रा नदी में स्नान करके लाया करते थे। वे सदा धरती पर सोते थे। उनका सारा जीवन प्रजा की रक्षा और उनके हित में बीता। उनकी कीर्ति पताका आज भी विक्रम संवत् के रूप में भारत वर्ष में प्रचलित है। वे सदा प्रजा के सेवक बनकर न्याय, नीति और धर्म के आधार पर शासन करते थे। विक्रम संवत् भी उनके नाम से न होकर देश के नाम से अर्थात् मालव संवत् के नाम से प्रचलित हुआ था जो शताब्दियों बाद प्रजा द्वारा विक्रम संवत् के नाम से प्रसिद्ध किया गया।

उनका न्याय जगद्विख्यात था जिसकी कई कथाएं आज तक लोक में प्रसिद्ध हैं। धन्वन्तरि, क्षपणक, अमरसिंह, शंकु, बेताल भट्ट, खटखर्पर, कालिदास, वररुचि और वराहमिहिर जैसे अनेक विद्वानों की उनकी सभा में उपस्थिति उनके विद्या प्रेमी होने का प्रमाण है और शकों पर विजय उनकी वीरता का।

नववर्ष की तैयारी

सही उत्तर

नवसंवत्सर नया वर्ष

कविता : प्रदीपमणि तिवारी 'ध्रुव'

संवत्सर नववर्ष हमारी संस्कृति का आधार
नूतन आंग्ल वर्ष से क्यों फिर क्यों इतना प्यार
सत्य, सनातन, ऋतु पर्वों पर आधारित त्यौहार
यह वैदिक प्राचीन सभ्यता जीवन का आधार
चैत्रसुदी गुड़ीपड़वा को हम मनाते नववर्ष
अपनापन का भाव है इसमें, मन में होता हर्ष
सकल विश्व में सबसे सुन्दर संस्कृति प्राचीन हमारी
टेसू खिले लाल सिन्दूरी स्वागत की तैयारी
बहन भाइयो! नन्हें-मुन्नो! ग्राम, गाय, गोपाल
है पहचान हमारी अपनी, गाँवों की चौपाल
सूरजमुखी, ज्वार-बाजरा, मकई धान उगाएँ
फसलों का त्यौहार है आया बैशाखी कहलाए
भिन्न भिन्न हैं प्रान्त बोलियाँ, भिन्न-भिन्न त्यौहार
प्यार करें निज संस्कृति से जीवन का आधार।

● भोपाल (म.प्र.)

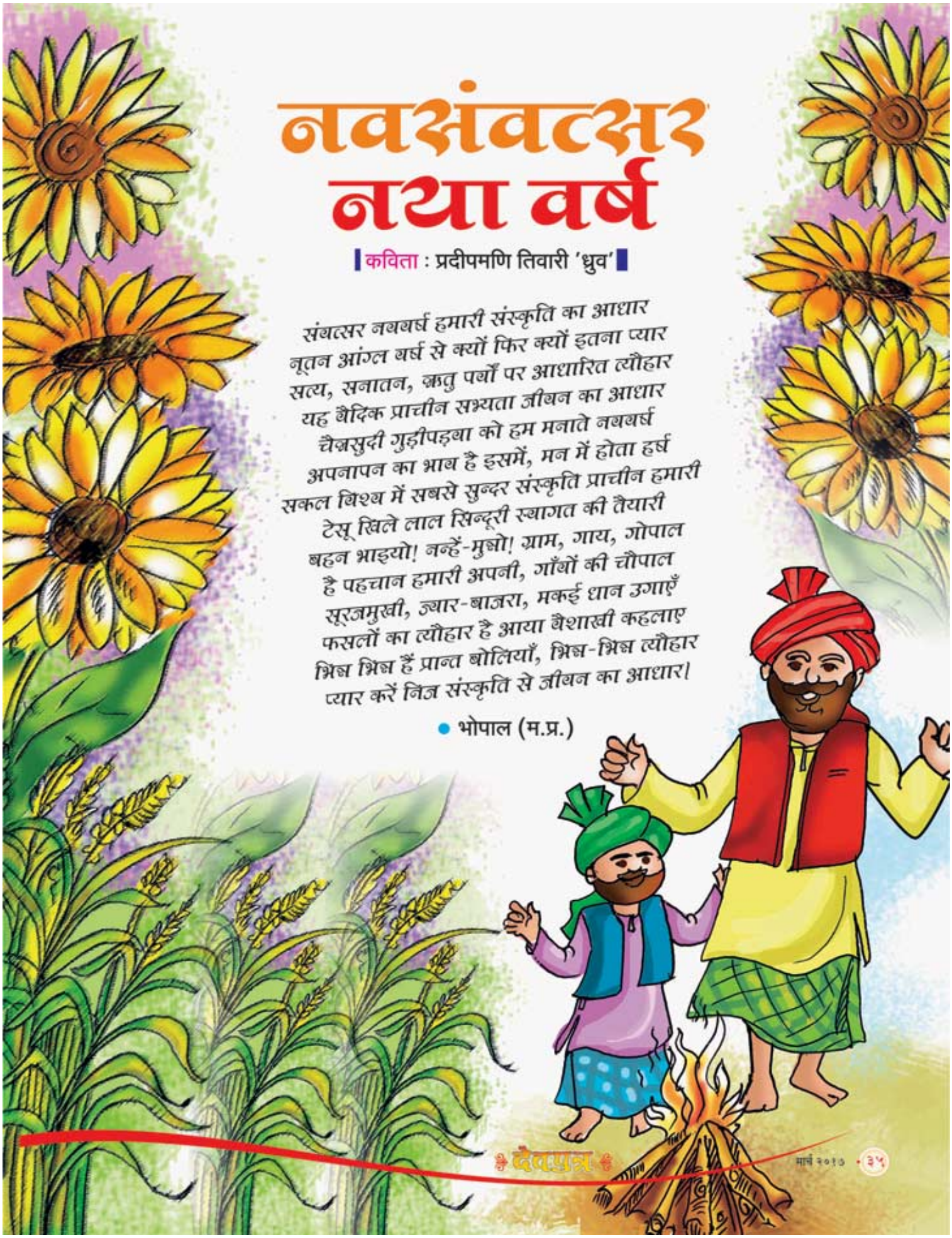

नववर्ष का निश्चय

चित्रकथा - देवांशु वत्स

कैसे निश्चित हुआ वारों का क्रम

• गोपाल माहेश्वरी

क्या आपने कभी पता लगाया है कि हमेशा रविवार के बाद सोमवार फिर मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि ये वार इसी क्रम में क्यों आते हैं? पूछने पर कुछ लोग आपको बताएंगे कि यह क्रम पाश्चात्य जगत् से आया है अर्थात् रविवार, सोमवार, सण्डे, मण्डे का अनुवाद है। लेकिन आप दावे के साथ कह सकते हैं यह क्रम भारतीय खगोलवेत्ता महर्षियों का दिया हुआ है। सारा संसार केलेण्डर अर्थात पचांग के लिए भारत का ऋणी है।

दावा करते समय प्रमाण तो चाहिए ही? तो अथर्व वेद के अथर्व ज्योतिष का १३वाँ श्लोक याद रखिए-

आदित्यः सोमो भौमश्च तथा बुध बृहस्पतिः।
भार्गवः शनैश्चरश्चैव एते सप्त दिनाधिपाः॥

यह ग्रंथ कम से कम पांच हजार वर्ष पुराना है और पाश्चात्य कैलेण्डर, वही जनवरी फरवरी मार्च वाला वह तो २०१७ वर्षों से पुराना नहीं है, यह तो सब जानते हैं।

अब रुचि हो तो यह भी समझ लो। १ वार २४ घण्टे का होता है जिसे भारतीय शास्त्रों में १ होरा कहा गया वह ढाई घटी मतलब १ घण्टे की होती है।

आकाश में अपने सौर मण्डल में ग्रहों का क्रम आपको पता है सूर्य, बुध, शुक्र, पृथ्वी, मंगल, गुरु, शनि। बस इसी से बना

है वारों का क्रम। चूंकि हम रहते हैं पृथ्वी पर इसलिए हम पृथ्वी को केन्द्र में मानकर सूर्य को भी एक ग्रह मानकर गणना करते हैं।

वैसे तो सूर्य एक तारा हैं वह सौर मण्डल के केन्द्र में है और स्थिर है इन तथ्यों के आधार पर पाश्चात्य प्रेमी तुम्हें झूठा सिद्ध करने का प्रयास कर सकते हैं पर उन्हें बताना चूंकि हम पृथ्वी पर स्थित है और सूर्य हमें पृथ्वी की पूर्व से पश्चिम दिशा की ओर जाता दिखता है इसलिए इस बिना किसी यंत्र के सर्वसाधारण मनुष्यों को दिखने वाले सच के आधार पर ही सूर्य को विभिन्न राशियों में घूमता माना गया है। ऐसा ही एक भ्रम चन्द्रमा को लेकर हो सकता है जो वस्तुतः पृथ्वी का उपग्रह है उसे ज्योतिष में ग्रह क्यों माना है? लेकिन जो कारण सूर्य का वही चन्द्र का वह पृथ्वी से अंतरिक्ष में स्थित निकटतम एवं सामान्य रूप से दिखाई देने वाला खगोलीय पिण्ड जो है इसलिए सामान्य लोगों को खुली आँखों से सरलता से

दिखने वाले सूर्य व चन्द्र क्रमशः तारा व उपग्रह होकर भी ग्रह मान लिए गए और वारों का नामकरण में इनको सम्मिलित किया गया।

अब रविवार के बाद इस क्रम में बुधवार क्यों नहीं आता ? यह भी समझ लो।

सृष्टि बनी उस दिन चैत्र मास था प्रतिपदा तिथि शुक्ल पक्ष और रविवार था। ब्रह्मपुराण में लिखा है तब सारे ग्रह मेष राशि के प्रारंभिक भाग अश्विनी नक्षत्र पर थे। आपने दौड़ के मैदान में ट्रेक पर खड़े धावकों को देखा है न करीब करीब वैसा ही।

अब केन्द्र में रहने वाला व प्रधान मानते हुए सूर्य को प्रथम होरा (घण्टे) का स्वामी मान कर उसने प्रारंभ होने वाला दिन रविवार बना। शुक्र, बुध, चन्द्र, शनि, गुरु, मंगल उनकी कक्षा, गति एवं दृश्य स्थितियों के अनुसार उस समय के विद्वानों ने एक एक होरा का अधिपति माना। इस प्रकार २४ घण्टे (होरा) का एक अहोरात्र बीत जाने पर २५वें घण्टे में आने वाली होरा का जो स्वामी है अर्थात् अगले दिन सूर्योदय के पहले घण्टे में जो होरा होगी उसके स्वामी के नाम पर उस दिन का नाम रखा गया, यही 'वार' या 'वासर' कहलाया। इसलिए रविवार के बाद बना सोमवार फिर मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि।

थोड़ा सा गोल गोल घूमता गणित है पर भूगोल (पृथ्वी) से खगोल (अंतरिक्ष) की गणना एवं प्रमुख आकाशीय पिण्डों की गतियां सब चक्रीय है तो गणित भी वैसा ही होगा।

अच्छा अब बताओ चौबीस घण्टों में सण्डे कब शुरु होगा और रविवार कब? तारीख तो रात के बारह बजे बदलती है। सण्डे भी उसी के साथ पर अपना रविवार तो सूर्योदय से ही बदलेगा। बदलते तो वे भी सूर्योदय के साथ ही है पर सूर्य उनके देशों में रात जब उगता है, हमारे यहां तब होती है।

तो समझ आया न कुछ कुछ वारों का रहस्य? और यह भी कि कभी हो नहीं सकते सप्ताह में दो या तीन रविवार, चाहे बच्चों का कितना भी मन करे।

● इन्दौर (म.प्र.)

सही उत्तर

अंकयोग ०७					२६
६	२	३	४	५	२३
६	७	८	६	१	३१
२	३	४	५	६	२०
७	८	६	१	२	२७
३	४	५	६	७	२५
२७	२४	२६	२५	२१	२८

सही उत्तर

छोटे से बड़ा

१०, ९, २, ६, ७

१, ८, ५, ३, ४

वनवासियों द्वारा नववर्षोत्सव

झारखण्ड एवं छत्तीसगढ़ के वनवासी लोग चैत्र नवरात्रि के समय नवसंवत्सर से प्रारंभ के दिन से रामनवमी तक पूरे १० दिन उत्सव के रूप में मनाते हैं। यह उत्सव गांव को वन्दनवारों, केसरिया पताकाओं व ध्वजाओं से सजा कर धूम-धाम के साथ ढोल-मादल आदि वाद्य यंत्रों की ध्वनि पर सुरताल के साथ गीत गाते हुए करमा नृत्य करते हुए आनन्दोत्सव के रूप में मनाया जाता है।

करम अर्थात् साल के वृक्ष को नवसंवत्सर के अवसर पर पूजकर उसके चारों और आनंदपूर्वक किए जाने वाला नृत्य **'करमा नृत्य'** कहलाता है।

(साभार : विश्व की जनजातियां : प्रो. त्रिलोकीनाथ सिन्हा)

पुस्तक परिचय

आलोक पुरुष महावीर/डॉ. चक्रधर नलिन – बाल साहित्य के वरेण्य रचनाकार नलिन जी द्वारा भगवान महावीर के पावन चरित्र पर रचित रोचक पद्य-कथा

प्रकाशन - वेदान्त पबिल्केशन, बालाजी हाउस, बीरबल साहनी मार्ग, लखनऊ (उ.प्र.)

पृष्ठ – ३२ /मूल्य १२५/-

अनूठी बाल कहानियाँ/अमरेन्द्र कुमार सिंह – पन्द्रह ऐसी विज्ञान बाल कहानियाँ जो न केवल रोचक हैं मनोरंजन है बल्कि विज्ञान के सिद्धांतों को सरलता से स्पष्ट करती हुई जिज्ञासाएं भी शांत करती है।

प्रकाशन - बाल साहित्य शोध संस्थान, दरबारी नगर, अल्मोड़ा (उत्तराखण्ड)

पृष्ठ – ६४ /मूल्य ५०/-

मंगलग्रह के जुगनू/प्रबोध कुमार गोविल – स्वच्छता का संदेश देती सम्पूर्ण बहुरंगी चित्रों से सुसज्जित रोचक बालकथा

प्रकाशन - राही सहयोग संस्थान, बी-३०१, मंगलम् जागृति रेजीडेंसी, ४४७ कृपलानी मार्ग आदर्श नगर, जयपुर ४

पृष्ठ – २२ /मूल्य १००/-

बच्चो तुम हो फूल चमन के/कृष्णादेव प्रसाद सिंह – पविविध बाल विषयों पर सुरुचिपूर्ण बोधक ४३ बाल रचनाएं

प्रकाशन - कृष्णादेव प्रसाद सिंह, मनभावन ७ गोविन्द विहार (कुलकर्णी मंगल कार्यालय के नजदीक) नाशिक

पृष्ठ – ७२ /मूल्य ६००/-

श्रीमद् भागवत पुराण की कथाएं/डॉ. रामचन्द्र वर्मा – श्रीमद् भागवत पुराण भारतीय संस्कृत की अमूल्य निधि है। उसमें से चुनी हुई रोचक कथाओं का हिन्दी भाषा में रुचिकर संकलन

प्रकाशन - सूर्य भारती प्रकाशन, नई सड़क, दिल्ली ११०००६

पृष्ठ – २३२ /मूल्य ६००/-

क्रांतिकारियों के १०१ प्रेरक प्रसंग – सुखवीर सिंह दलाल – क्रांतिकारियों के रोमांचक और देशभक्ति भावना से भरपूर लघु प्रेरक प्रसंगों का संग्रह।

प्रकाशन - अंकुर प्रकाशन, ए-३१, सी न्यू गुप्ता कालोनी, दिल्ली ११०००९

पृष्ठ – ७१ /मूल्य १७५/-

भारतीय महापुरुष/तनसुखराम गुप्त – प्राचीनकाल से आधुनिक युग तक भारत माँ की महिमा बढ़ाने वाले १९ महापुरुषों का परिचय

प्रकाशन - अंकुर प्रकाशन, ए-३१, सी न्यू गुप्ता कालोनी, दिल्ली ११०००९

पृष्ठ – १५२ /मूल्य १७५/-

देशभक्ति की सच्ची कहानियाँ/तनसुखराम गुप्त – आजादी की दूसरी लड़ाई के सेनानियों व अन्य देशभक्ति पूर्ण ३४ रोमांचक प्रेरक प्रसंग

प्रकाशन - सूर्य भारती प्रकाशन, नई सड़क, दिल्ली ११०००६

पृष्ठ – ८०/मूल्य १७५/-

हमारे राज्य पुष्प

हिमालच प्रदेश का राज्य पुष्प

गुलाबी बुरान्स

कविता : डॉ. परशुराम शुक्ल

बदल हिमालय ने अपनाया,
अभिनव फूल निराला।
पहले लाल रंग वाला था,
आज गुलाबी वाला।
भारत में मिलती बुरुन्श की,
कई जातियाँ प्यारी।
रंग बिरंगी सुन्दर-सुन्दर,
सबकी आभा न्यारी।
इन्हीं जातियों में मिलती है,
जाति एक मतवाली।
घन्टी जैसी इसकी काया,
लगती बड़ी निराली।
रंग सफेदी लिए गुलाबी,
फूल झाड़ियों वाला।
लेकिन वृक्षों पर भी खिलता,
होता बड़ा निराला।
अपनी सुन्दरता के कारण,
जग में जाना जाता।
मिलकर साथ अन्य फूलों के,
संकर फूल बनाता।

● भोपाल (म.प्र.)

॥ संस्मरण ॥

मीठी यादें

युवा अटल :
स्केल की मार, लोहार का घर

शैवाल सत्यार्थी

युवा अटल : किशोर शैवाल

"...प्रिय शैवालजी, 1957 का फोटो मिला – दुर्लभ चित्र! मैं संसद के लिए, बलरामपुर से पहली बार 1957 में चुनाव लड़ा था। उस दिन, प्रो० कुंटे के कार्यक्रम में आपसे – मुलाकात हुई थी... पचास साल की स्मृतियाँ झकझोर गईं!

आपका –

अटल बिहारी वाजपेयी

(अटल बिहारी वाजपेयी)

[उपरोक्त 'दुर्लभ चित्र' पर हस्ताक्षर 1978 के हैं – अटल जी जब, जेल से पैरोल पर, ग्वालियर आए थे।]

अभी, कुछ दिवस पूर्व–श्रीमान भगवती भाई सा. से भेंट हुई.... भगवती भाई सा. अर्थात् श्री भगवती प्रसाद सिंहल जी– प्रसिद्ध वकील/नोटरी (और मेरे बड़े भ्राता तुल्य)। १९४८ में, गांधी हत्या के पश्चात, रा. स्व. संघ पर लगाए गए प्रतिबंध के विरोध में हुए –विश्व के सर्वाधिक विराट सत्याग्रह में, उनके साथ जेल में रहने का सौभाग्य मुझे मिला।

१९३७–३८ के लगभग, भाई सा. और श्री अटल जी– गोरखी मिडिल स्कूल में सहपाठी थे। बातचीत में उन्होंने, अटल जी के संबंध में, दो अछूते संस्मरण सुनाए– जो शायद ही किसी को याद हों...अटल जी को भी नहीं...

उन्होंने बताया कि अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय से अंग्रेजी भाषा का एक शिक्षक गोरखी विद्यालय में आया। उसका नाम था तस्लीम अहमद। उसने एक बार किसी बात पर नाराज होकर अटल जी को स्केल मारी, जो शायद उनके कान पर पड़ी। बालक अटल का धैर्य तथा शालीनता देखिए कि उसने, विद्यालय या घर में इसकी शिकायत तक नहीं की।

उसी दौर में शायद अटलजी ने एक मजेदार कविता लिखी, उसका शीर्षक था– 'लोहार का घर' भगवती भाई सा. यादों में खोते हुए कहने लगे, उस कविता की एक पंक्ति मुझे याद आ रही है–

''सियार न जिसमें रहना चाहे,
कुत्ता न जिसमें रहेगा।''

भाई सा. जोर से हँसे, कहने लगे– 'मैंने कई बार अटल से, उसका अर्थ (भाव) जानना चाहा, किन्तु वे हर बार टाल गए।

और फिर, हम तीनों भाई सा. मैं और मेरे मित्र श्री बाबूलाल शर्मा और उसके पश्चात् राष्ट्र के महानायक बने– श्री अटल जी की मीठी यादों को संजोते हुए, इतना हँसे कि ग्वालियर का किला हिल गया। गिरते गिरते, बस, बच गया...

• ग्वालियर (म.प्र.)

देवपुत्र प्रश्नमंच

(१) प्रसिद्ध धार्मिक ग्रंथ जिसे स्वयं श्रीकृष्ण के मुख से प्रकट हुआ माना जाता है कौन सा है?
(अ) महाभारत
(आ) श्रीमद्भागवत
(इ) श्रीमद्भगवद्गीता

(२) भारत में सर्वप्रथम १८१३ में मुद्रित २६९४ श्लोकों का १२ अध्यायों वाला प्राचीन ग्रंथ जिसे प्रधान स्मृति ग्रंथ माना जाता है कौन सा है?
(अ) मनुस्मृति
(आ) पाराशर स्मृति
(इ) याज्ञकल्क्य स्मृति

(३) भारतीय संस्कृत साहित्य का सबसे बड़ा काव्य जिसमें १ लाख श्लोक है एवं जिसे वेदव्यास जी रचा था?
(अ) महाभागवत
(आ) महाभारत
(इ) महारामायण

(४) १५५४ ई. में अवधी भाषा में रचा प्रसिद्ध रामकाव्य जो सात काण्डों में विभक्त है कौन सा है?
(अ) कृत्तिवास रामायण
(आ) रामचरित मानस
(इ) वाल्मीकि रामायण

(५) भगवान बुद्ध के उपदेशों का संग्रह जिन तीन खण्डां में संकलित है वे कहलाते हैं?
(अ) त्रिविनय
(आ) त्रिविक्रम
(इ) त्रिपिटक

(६) प्रसिद्ध धर्मग्रंथ जिसमें भगवान ऋषभ देव जी के जीवन चरित्र का विशद वर्णन है जिसके रचयिता ज्ञानसेन है कौन सा है?
(अ) भागवत पुराण
(आ) आदि पुराण
(इ) वराह पुराण

(७) प्रसिद्ध पुराण जिसमें भगवान श्रीकृष्ण की लीलाओं का वर्णन अत्यंत सुन्दर वर्णन है जिसकी प्रसिद्धि शेष पुराणों की अपेक्षा सर्वाधिक है कौन सा है?
(अ) विष्णु पुराण
(आ) हरिवंश पुराण
(इ) भागवत् महापुराण

(८) प्रसिद्ध धर्मग्रंथ जिसमें कई गुरुओं, संतों, भक्तों की वाणियाँ संकलित हैं एवं जो आदि ग्रंथ के नाम से भी प्रसिद्ध है कौन सा है?
(अ) श्रीगुरु ग्रंथ साहिब
(आ) धम्मपद
(इ) जैनागम

(९) रामकाव्यों में सर्वप्रमुख काव्य जिसे आदिकाव्य भी कहा जाता है कौन सा है इसकी रचना वाल्मीकि ने की थी?
(अ) वेद
(आ) रामायण
(इ) श्री रामचरित मानस

(१०) संसार के सबसे प्राचीन ग्रंथ के रूप में ख्यात कौनसा ग्रंथ है?
(अ) उपनिषद
(आ) आरण्यक
(इ) ऋग्वेद

(उत्तर इसी अंक में।)

करनी का फल

कहानी : शिवचरण सेना 'शिवा'

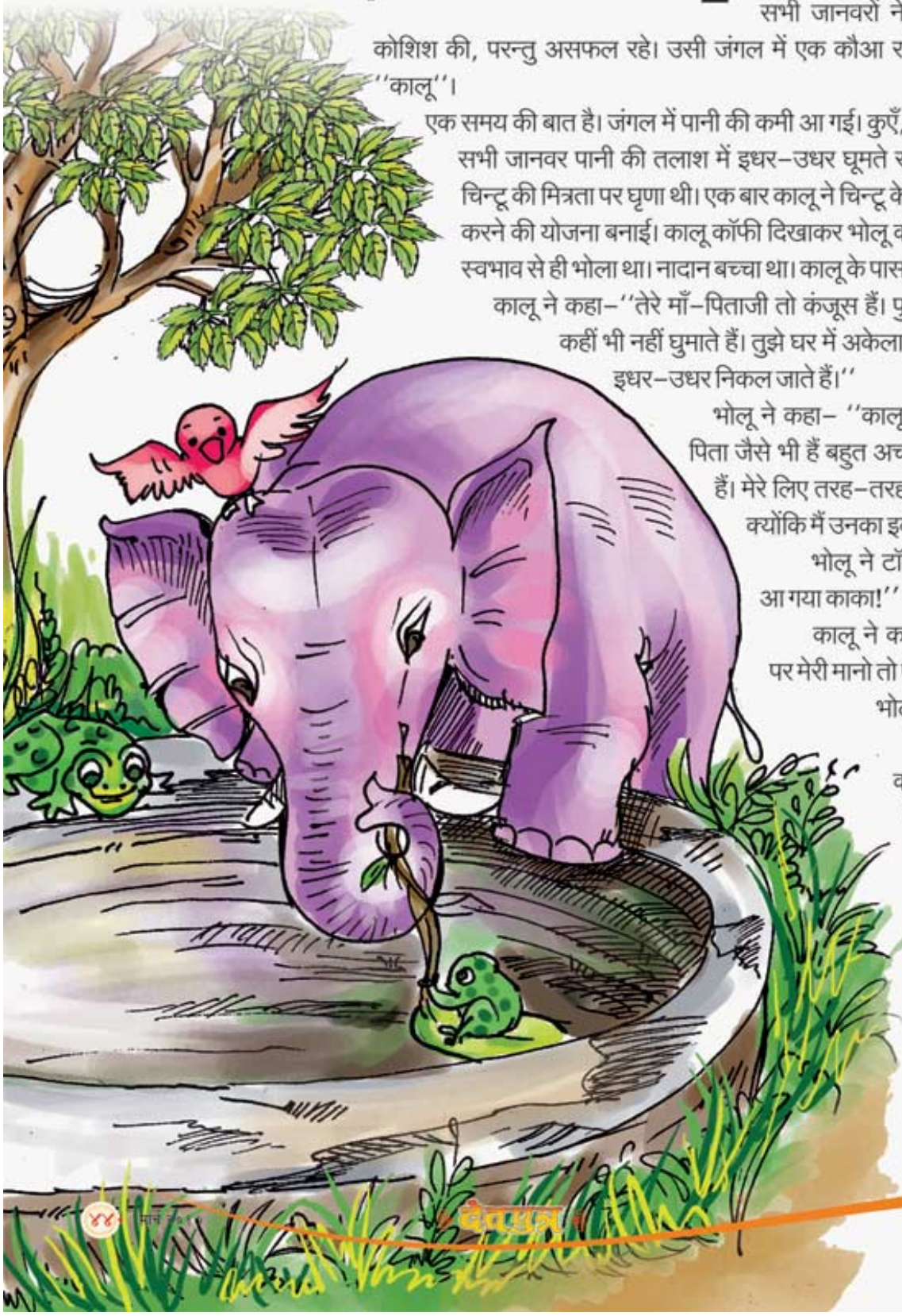

एक जंगल था। वह बहुत घना था। उसमें सभी प्रकार के जीव जन्तु रहते थे। जंगल में एक हाथी था उसका नाम पिंटू और एक मेंढक जिसका नाम चिन्टू था। दोनों पक्के दोस्त थे। सभी जानवरों ने उनकी मित्रता तोड़ने की कोशिश की, परन्तु असफल रहे। उसी जंगल में एक कौआ रहता था जिसका नाम था– ''कालू''।

एक समय की बात है। जंगल में पानी की कमी आ गई। कुएँ, तालाब, नदी सब सूख गए। सभी जानवर पानी की तलाश में इधर–उधर घूमते रहते। 'कालू' को पिन्टू और चिन्टू की मित्रता पर घृणा थी। एक बार कालू ने चिन्टू के बच्चे को भोलू का अपहरण करने की योजना बनाई। कालू कॉफी दिखाकर भोलू को पास बुलाया। भोलू बेचारा स्वभाव से ही भोला था। नादान बच्चा था। कालू के पास आ गया।

कालू ने कहा–''तेरे माँ–पिताजी तो कंजूस हैं। पुरानी विचारधारा के हैं। तुझे कहीं भी नहीं घुमाते हैं। तुझे घर में अकेला छोड़कर पानी की तलाश में इधर–उधर निकल जाते हैं।''

भोलू ने कहा– ''कालू काका! सुनो'' – मेरे माँ–पिता जैसे भी हैं बहुत अच्छे हैं। मुझे बहुत प्यार करते हैं। मेरे लिए तरह–तरह की चीजें खाने को लाते हैं। क्योंकि मैं उनका इकलौता पुत्र जो ठहरा।''

भोलू ने टॉफी खाई और कहा–''मजा आ गया काका!''

कालू ने कहा– ''वह तो सब ठीक है, पर मेरी मानो तो एक बात कहूँ।

भोलू– ''कहो?''

कालू (धीरे से भोलू के कान में फुसफुसाया)– ''पास में एक कुँआ है। उसमें काफी पानी है। उसके अन्दर तरह–तरह के चित्र भी दिखते हैं। चल हम दोनों चलते हैं।''

भोलू – ''काका! मुझे डर लगता है। मेरे माता–पिता को पता चल गया तो वे मेरी...''

कालू – ''अरे वह सब मेरे ऊपर छोड़ दे।''

भोलू बेचारा कालू के बहकावे में आ गया।

कालू ने भोलू को अपनी पीठ पर बिठाया और उड़ गया। दोनों एक कुएँ की मुण्डेर पर जाकर उतरे।

उतरते ही कालू ने कहा– ''ये देख! कितना सारा पानी है। अरे! भोलू देख तो सही इसमें किसनी प्यारी तस्वीर भी नजर आ रही है।''

भोलू जैसे कुएँ में देखने लगा कौवे ने पीछे से धक्का दे दिया। बेचारा भोलू सूखे कुएँ में जा गिरा।

भोलू बहुत चिल्लाया– ''बचाओ–बचाओ। अरे कोई है?

वह बहुत रोया और कहा कि –'' काका! तुम बहुत खराब हो। धोखेबाज हो। मैंने आपका क्या बिगाड़ा जो मुझे कुएँ में धकेल दिया।''

रोते रोते थककर भोलू सो गया।

कुएँ के पास नीम का पेड़ था। उस पर एक चिड़िया टीना बैठी–बैठी यह सब घटना देख रही थी। बेचारी टीना दुबली पतली छोटी थी। कौवे से पंगा नहीं ले सकती थी। टीना ने बहुत कोशिश की, परन्तु असफल रही। संध्या का समय नजदीक आ रहा था। वह बहुत चिंतित थी। थोड़ी देर बाद पिन्टू और चिन्टू दोनों बच्चे को ढूढते हुए नजर आए।

अचानक टीना उड़कर पिन्टू और चिन्टू के पास गई।

टीना ने पूछा– ''पिन्टू दादा आज इधर कैसे? अरे! चिंटू तुम भी। आप दोनों क्यों घबरा रहे हो?

पिन्टू – ''अरी टीना बहन क्या बताऊँ? बेचारा चिन्टू का बेटा कहीं निकल गया है हम दोनों दो घण्टे से उसे ढूँढ रहें हैं। मिल ही नहीं रहा।''

टीना तपाक् से बोल उठी– ''अरे वह भोलू तो इस कुएँ में गिर गया।''

पिन्टू व चिन्टू एक साथ ''कैसे?''

टीना ने कहा– ''ये सब बाद की बात है। संध्या का समय हो रहा है। अँधेरा हो जायेगा। जल्दी करो, भोलू को निकालने का प्रयास करें।''

पिन्टू दादा ने अपनी सूण्ड कुएँ में चलाई, परन्तु सूण्ड आधे कुएँ तक ही पहुँच पाई। पिन्टू ने एक तरकीब सोची वह पास के बरगद के पेड़ से एक लम्बी टहनी तोड़कर लाया और कुएँ में लटकाई। टहनी मेंढक तक पहुँच गई थी परन्तु, भोलू थककर सो गया था। टीना उड़कर कुएँ में भोलू के पास गई। चोंच से भोलू को उठाया। बरगद की टहनी के पत्ते पर उसे बिठाया।

पिन्टू से कहा– ''हाँ, पिन्टू दादा धीरे–धीरे टहनी को ऊपर खींचो।''

पिन्टू ने टहनी को खींचा। भोलू बाहर आया। अपने पिता से लिपटकर बहुत रोया और कहा कि– ''पिताजी! अब मैं किसी के बहकावे में नहीं आऊंगा।''

टीना ने कौवे की करतूत पिन्टू व चिन्टू को बताई।

सभी सकुशल अपने घर लौट आए। कुछ दिनों पश्चात् कालू ने उस कुएँ के पास पेड़ पर अपनी पत्नी रीना के लिए घोंसला बनाने की योजना बनाई। योजनानुसार वह तिनका लाता और गूंथता। टीना ने सारी बात पिन्टू दादा को बताई। पिन्टू दादा जाता और उसका घोंसला बिगाड़ आता।

कालू फिर दिन भर मेहनत करता तिनका लाता गूंथता। पिन्टू दादा उसे फिर बिगाड़ आता।

आखिर कालू परेशान हो गया। उसने हाथी दादा से पूछ लिया–''पिन्टू दादा! मैं घोंसला बनाने के लिए बार–बार तिनके लाता हूँ। उन्हें अच्छी तरह से जमाता हूँ और आप ठहरे जो उन्हें बिगाड़ देते हो। आप ऐसा क्यों कर रहे हो?''

पिन्टू–''कुछ दिन पूर्व तुमने चिन्टू के बच्चे भोलू का बहला फुसलाकर अपहरण कर उसे सूखे कुएँ में धकेल दिया था। इसलिए तुम्हें भी बच्चों के लिए तड़पना पड़ेगा।

भोलू ने जो वारदात पिन्टू दादा को बताई वह वारदात पिन्टू ने कालू को बताई और कहा–''तुमने चिन्टू के बच्चे भोलू के साथ ऐसा क्यों किया?''

कालू– ''मैं तुम दोनों की मित्रता पर बहुत जलता था। सभी जानवर तुम्हारी मित्रता की प्रशंसा करते थे। एक मिसाल देते थे। जो मुझे खलती थी। अब किसी प्रकार का धोखा, वारदात किसी के साथ नहीं करूँगा। भविष्य में ऐसा व्यवहार नहीं करुँगा तथा सभी से मित्रता रखूँगा ताकि सभी हमारी मित्रता की मिसाल दे सकें।'' ऐसा कहकर कौए ने सब के हाथ जोड़कर माफी मांगी और अपनी करनी पर बहुत पछताया। इसके बाद सभी आपस में मिल जुलकर रहने लगे। एक–दूसरे की सहायता करने लगे।

● झालावाड़ (राज.)

रंग भरें

● चांद मो. घोसी

यहाँ हमने अपने नन्हें मित्रों के लिए एक चित्र दिया है जो श्वेत-श्याम होने के कारण नीरस लगता है, तो नन्हे मित्रो! देर किस बात की, उठाएं अपने रंग तथा ब्रश और बना दें इस चित्र को रंगीन।

चुटकुले

◀ विष्णुप्रसाद चौहान

टी.सी. - ये विकलांग लोगों का डिब्बा है। इसमें क्यों सफर कर रहे हो?

व्यक्ति - श्रीमान् मेरे साथ ये है।

टी.सी. - ये तो आम है।

व्यक्ति - हाँ, लेकिन ये लंगड़ा आम हैं।

****

सोनू पिताजी को कुछ समझाना चाह रहा था

पिताजी - ''मुझे मत समझाओ, मैंने दुनिया देखी है।''

सोनू- माँ! देखो, पिताजी अकेले विश्व भ्रमण कर आए।

****

एक लड़का रात को दो बजे डॉक्टर को फोन लगाता है। और बोलता है- डॉ. साहब मुझे नींद न आने की बीमारी है...

डॉक्टर - तो बेटा! इसे फैला क्यों रहा है, कम से कम मुझे तो सोने दे।

****

मरीज - उफ्...! ऐसी बीमारी से तो मर जाना अच्छा है।

डॉक्टर - हम पूरी कोशिश कर तो रहे है।''

****

पत्नी (पति से)- जरा रसोई से नमक लेते आना।

पति - यहां तो नमक नहीं है।

पत्नी - तुम तो हो ही कमचोर। एक काम ढंग से नहीं कर सकते, बस बहाने बनाते रहते हो। मुझे पता था कि तुम्हें नहीं मिलेगा, इसलिए पहले ही ले आई थी।

****

पिता (पुत्र से) - बेटा! मेहनत किया कर, मेहनत करने से कोई मर नहीं जाता।

पुत्र - इसीलिए तो मैं मेहनत नहीं करता पिताजी, असली मजा तो उसी काम में है, जिसमें जान का खतरा हो।

● ढाबला हरदू (म.प्र.)

सही उत्तर

देवपुत्र प्रश्न मंच

(१) इ (२) अ (३) आ
(४) आ (५) इ (६) आ (७) इ
(८) अ (९) आ (१०) इ

भवालकर स्मृति कहानी प्रतियोगिता २०१७

प्रिय बच्चो,

प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी देवपुत्र के पूर्व व्यवस्थापक स्व. श्री शांताराम जी भवालकर की पावन स्मृति (७ जनवरी) के अवसर पर **भवालकर स्मृति कहानी प्रतियोगिता** के लिए आपकी स्वरचित बाल कहानियाँ प्रविष्टि के रूप में आमंत्रित हैं। प्रतियोगिता केवल बाल लेखकों के लिए है अतः कहानी के स्वरचित, मौलिक एवं अप्रकाशित होने के प्रमाण पत्र के साथ अपना पूरा नाम कक्षा एवं घर के पते का पिनकोड सहित स्पष्ट उल्लेख अवश्य करें।

आपकी बाल कहानी हमें ३१ मार्च २०१७ तक अवश्य प्राप्त हो जाना चाहिए। कहानी इस पते पर भेजें–

पुरस्कार

प्रथम : १५००/- ● द्वितीय : ११००/- ● तृतीय : १०००/-

५५०/- के दो प्रोत्साहन पुरस्कार

भवालकर स्मृति
कहानी प्रतियोगिता २०१७
देवपुत्र

४०, संवाद नगर, इन्दौर ४५२००१ (म.प्र.)

देवपुत्र

के स्वामित्व का विवरण

फार्म-४ (नियम-८)

प्रकाशन स्थान	इन्दौर
प्रकाशन अवधि	मासिक
मुद्रक का नाम	कृष्ण कुमार अष्ठाना
(क्या भारत का नागरिक है) (यदि विदेशी है तो मूल देश)	हाँ
पता	४०, संवाद नगर, इन्दौर
प्रकाशक का नाम	कृष्ण कुमार अष्ठाना
(क्या भारत का नागरिक है) (यदि विदेशी है तो मूल देश)	हाँ
पता	४०, संवाद नगर, इन्दौर
उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार -पत्र के स्वामी हों तथा जो एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों।	सरस्वती बाल कल्याण न्यास

मैं कृष्ण कुमार अष्ठाना एतद् द्वारा घोषणा करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

(कृष्ण कुमार अष्ठाना)
प्रकाशक के हस्ताक्षर

शुल्क वृद्धि सूचना

आत्मीय ग्राहको !

आप सबका देवपुत्र के प्रति स्नेह और दुलार ही कारण है कि देवपुत्र अपने निरंतर प्रकाशन के ३७ वर्ष पूरे कर रहा है। इसके बहुरंगी कलेवर, सामग्री और साज सज्जा को पसंद करने के लिए हम आपके आभारी हैं।

कागज मुद्रण और प्रेषण की लागत में निरंतर वृद्धि से विवश होकर तीन वर्ष बाद एक बार पुनः इसकी सदस्यता दरों में वृद्धि करने का निर्णय हुआ है।

सरस्वती बाल कल्याण न्यास की बैठक में लिए निर्णयानुसार आगामी सत्र से इसकी सदस्यता दरें इस प्रकार रहेंगी।

एक अंक	२०/- रु.
वार्षिक सदस्यता	१८०/-रू.
त्रैवार्षिक सदस्यता	५००/-रू.
पंचवार्षिक सदस्यता	७५०/-रू.
आजीवन सदस्यता	१४००/-रू.
सामुहिक वार्षिक सदस्यता (कम से कम १० अंक लेने पर)	१३०/-रू. प्रति सदस्य

आलोक :

- नगरीय विद्यालयों के लिए यह दरें १ जुलाई २०१७ से व ग्राम भारती के विद्यालयों (जिनकी सदस्यता जनवरी से आरंभ होती है) के लिए १ जनवरी २०१७ से लागू रहेंगी।
- संस्थाओं की आजीवन सदस्यता १० वर्ष रहेगी।
- सामूहिक सदस्यता वाले सारे अंक एक साथ भेजे जाते हैं।

- सदस्यता के लिए ड्राफ्ट/धनादेश 'देवपुत्र' के नाम से बनवाइए।
- आनलाईन बैंकिंग से प्राप्त शुल्क की जमापर्ची की छायाप्रति (फोटोकॉपी) भेजना अनिवार्य है।

हमारा विश्वास है कि आपका स्नेह एवं सहयोग पूर्ववत् प्राप्त होता रहेगा।

- संपादक

सूर्य भारती प्रकाशन द्वारा प्रकाशित पुस्तकों की सूची

जीवनी साहित्य

अगस्त क्रांति के शहीद	नागेन्द्र सिन्हा	250.00
गदर पार्टी के शहीद	नागेन्द्र सिन्हा	150.00
आजादी के दीवाने	नागेन्द्र सिन्हा	200.00
बलिदान भूमि भारत	नागेन्द्र सिन्हा	200.00
देशभक्तों का बलिदान	नागेन्द्र सिन्हा	200.00
देशभक्तों की शहादत	नागेन्द्र सिन्हा	200.00
याद करेगा हिन्दुस्तान	नागेन्द्र सिन्हा	200.00
हमारे वीर विप्लवी	नागेन्द्र सिन्हा	200.00
शहीदे हिन्दुस्तान	नागेन्द्र सिन्हा	200.00
शहीदों की स्मृति	नागेन्द्र सिन्हा	200.00
हुतात्माओं की गाथा	नागेन्द्र सिन्हा	200.00
शहीदी सफरनामा	नागेन्द्र सिन्हा	200.00
काला पानी के शहीद	नागेन्द्र सिन्हा	200.00
26/11 के बलिदानी	नागेन्द्र सिन्हा	125.00
मूर्धन्य शिरोमणि महाकवि कालिदास	नरेन्द्र लाहड़	150.00
अन्ना कितने खिलाड़ी कितने अनाड़ी	अजीत सिंह तोमर	100.00
बिखरे मोती	तेजपाल सिंह	60.00
जय श्री राम	नरेन्द्र सहगल	130.00
क्रान्तधर्मी सरदार पटेल	डॉ. सुभाष रस्तोगी	60.00
नेताजी सुभाषचन्द्र बोस	डॉ. सुभाष रस्तोगी	60.00
पंडित दीनदयाल उपाध्याय : महाप्रस्थान	तनसुखराम गुप्त	60.00
युगपुरुष वीर सावरकर	अशोक कौशिक	200.00
क्रांतिकारी दयानंद	अशोक कौशिक	60.00
स्वामी श्रद्धानंद	अशोक कौशिक	60.00
चंद्रशेखर आजाद	सत्य शकुन	60.00
महाराणा प्रताप	सत्य शकुन	60.00
झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई	सत्य शकुन	60.00
क्रांतिकारी वासुदेव बलवंत फड़के	सत्य शकुन	75.00
छत्रपति शिवाजी	अशोक कौशिक	60.00
अमर क्रांतिकारी सुखदेव	डॉ. सुभाष रस्तोगी	60.00
क्रांतिकारी भगत सिंह	डॉ. सुभाष रस्तोगी	60.00
देशभक्त संन्यासी विवेकानन्द	डॉ. शत्रुघ्न	60.00
महात्मा हंसराज	अशोक कौशिक	60.00
संतगुरु रविदास	डॉ. बेणीप्रसाद शर्मा	60.00
ऐतिहासिक नारियाँ	डॉ. मुरारि लाल गोयल	60.00
पौराणिक नारियाँ	डॉ. मुरारि लाल गोयल	60.00
क्रांतिकारी महिलाएँ	डॉ. मुरारि लाल गोयल	75.00
भारतीय महापुरुष	तनसुखराम गुप्त	75.00
भारत के महान क्रांतिकारी	विराज	200.00
कहानी आजादी की	श्रीशरण	125.00
पानीपत के तीन घाव	कमल शुक्ल	125.00
गाथा काकोरी की	डॉ. आलोक कुमार रस्तोगी	65.00
भारत के दुर्धर्ष क्रांतिकारी	डॉ. बी.आर. धर्मेन्द्र	125.00
सुभाषचन्द्र बोस : सीमा के कितने पास	सिद्धेश राय	150.00
ऐसे बने थे लाला लाजपत राय	विनय श्रीवास्तव	125.00
ऐसे बने थे डॉ. भीमराव अम्बेडकर	अरमेन्द्र कुमार	125.00
ऐसे बने थे सरदार वल्लभभाई पटेल	प्रो. मधुसूदन त्रिपाठी	125.00

उपन्यास, कहानी एवं लघुकथा-संग्रह

देशभक्ति की सच्ची कहानियाँ	तनसुखराम गुप्त	60.00
श्रेष्ठ सांस्कृतिक कथाएँ	डॉ. रामलाल वर्मा	60.00
श्रेष्ठ शिक्षाप्रद कथाएँ	डॉ. रामलाल वर्मा	60.00
नारद की कथाएँ	अशोक कौशिक	60.00
इन्द्र की कथाएँ	अशोक कौशिक	60.00
हनुमान की कथाएँ	अशोक कौशिक	60.00
प्रसाद के सम्पूर्ण उपन्यास	जयशंकर प्रसाद	400.00
प्रसाद की सम्पूर्ण कहानियाँ	जयशंकर प्रसाद	400.00
बेगमों की ऐतिहासिक प्रेम कथाएँ	तेजपाल सिंह धामा	100.00
भूली-बिसरी ऐतिहासिक कहानियाँ	तेजपाल सिंह धामा	100.00
महाभारत की कहानियाँ, भाग-1	डॉ. रामचन्द्र वर्मा	125.00
महाभारत की कहानियाँ, भाग-2	डॉ. रामचन्द्र वर्मा	250.00
रात का सफर	पवन पांचाल	250.00
दायित्व	वन्दना सक्सेना	150.00
कथा कलश	संतोष यादव	175.00
बिच्छु	सरोज कृष्ण	175.00
अहसास	नरेन्द्र कुमार गौड़	200.00
लहू का रंग इक जैसा	सुधा जैन अंजुम	200.00
जीवन की पगडंडियाँ	वन्दना सक्सेना	300.00
प्रतिबिम्ब	नरेन्द्र गौड़	150.00
दृष्टि	उर्मि कृष्ण	150.00
फौजी की पत्नी	डॉ. धर्मराज राय	95.00
सती तथा अन्य कहानियाँ	मुंशी प्रेमचंद	200.00
सत्याग्रह तथा अन्य कहानियाँ	मुंशी प्रेमचंद	200.00
दुर्गा का मंदिर तथा अन्य कहानियाँ	मुंशी प्रेमचंद	200.00
बेटों वाली विधवा तथा अन्य कहानियाँ	मुंशी प्रेमचंद	200.00
आचार्य विष्णु गुप्त चाणक्य	राजेश शर्मा	250.00
विवेकानंद की वाणी	पवित्र कुमार शर्मा	75.00
दुखी भारत	लाला लाजपत राय	250.00
लड़की ही दहेज है	कमल शुक्ल	125.00

नाटक, एकांकी

प्रसाद के सम्पूर्ण नाटक एवं एकांकी	जयशंकर प्रसाद	400.00
श्रेष्ठ मंचीय एकांकी	राष्ट्रबंधु	100.00
नीलदेवी	भारतेन्दु	40.00
सामाजिक कुरीतियों के एकांकी	सं. घमंडीलाल अग्रवाल	125.00
पर्व/त्योहारों के एकांकी	सं. घमंडीलाल अग्रवाल	125.00
शिक्षाप्रद एकांकी	सं. घमंडीलाल अग्रवाल	125.00
देशप्रेम के एकांकी	सं. घमंडीलाल अग्रवाल	125.00
खेल संबंधी एकांकी	सं. घमंडीलाल अग्रवाल	125.00
हास्य-व्यंग्य के एकांकी	सं. घमंडीलाल अग्रवाल	125.00
विज्ञान परक एकांकी	सं. घमंडीलाल अग्रवाल	125.00
पर्यावरण चेतना के एकांकी	सं. घमंडीलाल अग्रवाल	125.00
सेवाभाव के एकांकी	सं. घमंडीलाल अग्रवाल	125.00
न्याय व अन्याय दर्शाते एकांकी	सं. घमंडीलाल अग्रवाल	125.00

कोश, निबंध, व्याकरण

वाक्य-वाक्यांश के लिए एक शब्द का कोश	तनसुखराम गुप्त	300.00
हिन्दी सही लिखिए	डॉ. रामरजपाल द्विवेदी	400.00
अंग्रेजी सही लिखिए	डॉ. रामरजपाल द्विवेदी	200.00
सरल हिन्दी व्याकरण	तनसुखराम गुप्त	200.00
मिडिल संस्कृत व्याकरण	गणेश शर्मा शास्त्री	150.00
अंकुर सचित्र बाल शब्दकोश	अवतार सिंह रावत	250.00
निबंध सौरभ	तनसुखराम गुप्त	300.00

स्वास्थ्य, शिक्षा, गृह विज्ञान

शिशु की स्वास्थ्य रक्षा कैसे करें?	डॉ. रेणु त्रिपाठी	150.00
परीक्षा की तैयारी कैसे करें	श्रीशरण	150.00
स्वादिष्ट व्यंजन कैसे बनाएँ?	अजंलि शरण	125.00
आचार-मुरब्बे और कॅन्फेक्शॅनरी	अजंलि शरण	125.00

हास्य-व्यंग्य

एम आई राइट	सुधा अंजुम	250.00
जंगल में अमंगल	उर्मि कृष्ण	250.00

धार्मिक, पर्यटन, यात्रा वृत्तांत एवं आध्यात्मिक चिंतन

वैदिक ग्रंथों में भौतिक विज्ञान	तेजपाल सिंह	200.00
भारत के ऐतिहासिक पर्यटन स्थल	वन्दना सक्सेना	75.00
उत्तराखण्ड के चार धाम	डॉ. शमी शर्मा	60.00
संक्षिप्त रामायण	ज्ञान चन्द	300.00
द्वापर कालीन भारत	कुंज बिहारी जालान	500.00
कालिकालीन भारत	कुंज बिहारी जालान	250.00
तुलसी और मानस	वन्दना सक्सेना	300.00
व्यथित जम्मू कश्मीर	नरेन्द्र सहगल	175.00
भारत में पर्यटन विकास	डॉ. संजय कांत भारद्वाज	150.00
जीवन में आनंद कैसे आएं?	पवित्र कुमार शर्मा	150.00
संभोग से सर्वनाश की ओर	इमरान सिद्दीकी	75.00

गीत, गजल, कविता

चुनी हुई सरस्वती वंदनाएँ	सं. घमण्डीलाल अग्रवाल	125.00
देश प्रेम की कविताएँ	सं. घमण्डीलाल अग्रवाल	125.00
उपयोगी वस्तुओं की कविताएँ	सं. घमण्डीलाल अग्रवाल	125.00
जीव जन्तुओं की कविताएँ	सं. घमण्डीलाल अग्रवाल	125.00
शिक्षाप्रद कविताएँ	सं. घमण्डीलाल अग्रवाल	125.00
भारतीय गौरव की कविताएँ	सं. घमण्डीलाल अग्रवाल	125.00
बाल समस्याओं की कविताएँ	सं. घमण्डीलाल अग्रवाल	125.00
पर्यावरण और विज्ञान की कविताएँ	सं. घमण्डीलाल अग्रवाल	125.00
हास्य व्यंग्य की कविताएँ	सं. घमण्डीलाल अग्रवाल	125.00
महापुरुषों की कविताएँ	सं. घमण्डीलाल अग्रवाल	125.00
खेलों की कविताएँ	सं. घमण्डीलाल अग्रवाल	125.00
प्रसाद के सम्पूर्ण काव्य	जयशंकर प्रसाद	400.00
स्वरोदय (संगीत सीखिए)	मिथलेश कुमार, मनोज कुमार	150.00
मधुमास की मुस्कान	जितेन्द्र सूद	150.00
मेरी 51 कविताएँ	मास्टर बलबीर सिंह	175.00
बाल गीत	कर्ण सिंह पराशर	150.00
कवितांजली	कविता पंत	200.00

सुखवीर सिंह दलाल

सावरकर, भगतसिंह, आजाद के प्रेरक प्रसंग	75.00
तिलक, पटेल और सुभाष के प्रेरक प्रसंग	60.00
बुद्ध, गाँधी, विवेकानन्द के प्रेरक प्रसंग	60.00
भूलीबिसरी विभूतियों के प्रेरक प्रसंग	75.00
विश्वप्रसिद्ध वैज्ञानिकों के प्रेरक प्रसंग	60.00
विश्वविख्यात महिलाओं के प्रेरक प्रसंग	60.00
पाश्चात्य विभूतियों के प्रेरक प्रसंग	125.00
योद्धाओं के प्रेरक प्रसंग	125.00
महापुरुषों की अमृत वाणी	150.00
वैश्य शिरोमणि	200.00
शोषितों के मसीहा दीनबंधु छोटूराम	100.00
भूली-बिसरी विभूतियाँ	150.00
भारत के प्राचीन संत	100.00
राजनीतिज्ञों के प्रेरक प्रसंग	100.00
संत वाणी	100.00
संतों के 101 प्रेरक प्रसंग	60.00
महापुरुषों के 101 प्रेरक प्रसंग	60.00
क्रांतिकारियों के 101 प्रेरक प्रसंग	60.00
आर्यवीरों के 101 प्रेरक प्रसंग	60.00
जाट जाति का प्लूटो : महाराजा सूरजमल	60.00
आर्य समाज के रत्न	100.00
जाट वीरांगनाएँ	60.00
सिख वीरांगनाएँ	60.00
महापुरुषों के हास्य व्यंग्य	75.00
दलित महान्	75.00

स्वामी विवेकानन्द साहित्य

भक्तियोग	60.00
कर्मयोग	95.00
ज्ञानयोग	125.00
विवेकानंद की वाणी	45.00

सूर्य भारती प्रकाशन

2596, नई सड़क, दिल्ली-110006

दूरभाष : 011-23266412, 23285575

(मो.) 0-9891332357, 0-9899832711

email : suryabhartiprakashan@gmail.com

उमा पब्लिकेशन

4769/23, अंसारी रोड,

दरियागंज, दिल्ली-110002

दूरभाष : 011-23266412, 23285575

(मो.) 0-9891332357, 0-9899832711

email : suryabhartiprakashan@gmail.com

डाक पंजीयन आय.डी.सी./एम.पी./६२३/२०१५-२०१७ आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५

Girls' Residential School at Indore from Classes V to XII

Queens' College

Queens' Maker

कक्षा चौथी से होस्टल सुविधा उपलब्ध

- Ranked as the second best Girls School in M.P. by Education World Survey in 2016.
- Ranked 46th among the top best 100 CBSE Schools of India.
- "CBSE New Generation School" Certified by CBSE New Delhi for 4 Years consecutively (2013 to 2016).

• Swimming Pool of National Standards	• Modern sports facilities available
• Sprawling Campus	• Compulsory Computer Education
• Student - Teacher Ratio 1:30	• Special remedial and enrichment classes
• Extra & competitive exam coaching facility available	• Healthy and Nutritious Food
• Smart Digital Classrooms	• Highly Qualified Faculty
• Variety of subjects available for +2 classes	• Spacious dormitories with all amenities
• Well Equiped Laboratories	• Enriched Library

Khandwa Road, Indore (M.P.) 452017, Contact No.: 0731-2877755-66-77
Visit us at: www.queenscollegeindore.org, E-mail: queenscollegeindore@rediffmail.com

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशन कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा अजीत प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिशर्स, प्रेस कॉम्पलेक्स, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित

प्रधान संपादक - कृष्णकुमार अष्ठाना